



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 183]

No. 183]

नई दिल्ली, शुक्रवार, अगस्त 20, 2004/श्रावण 29, 1926

NEW DELHI, FRIDAY, AUGUST 20, 2004/SRAVANA 29, 1926

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 20 अगस्त, 2004

अंतिम जांच परिणाम

विषय :—यूरोपीय संघ, सिंगापुर, कोरिया गणराज्य और अमरीका मूल के अथवा वहां से निर्यातित प्रोपाइलीन ग्लाइकोल के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच।

सं. 14/8/2003-डीजीएडी.—1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 तथा उसकी सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 को ध्यान में रखते हुए:

क. प्रक्रिया

निम्नलिखित निर्धारित प्रक्रिया का पालन किया गया है:-

- (i) निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे इसके पश्चात प्राधिकारी कहा गया है) को उपर्युक्त नियमों के अंतर्गत घरेलू उद्योग की ओर से मै0 मनाली पेट्रोकेमिकल्स लि0, चेन्नई से लिखित आवेदन प्राप्त हुआ, जिसमें यूरोपीय संघ, सिंगापुर, कोरिया गणराज्य, यू एस ए (जिन्हें इसके पश्चात संबद्ध देश कहा गया है) मूल के अथवा वहां से निर्यातित प्रोपाइलीन ग्लाइकोल के पाटन का आरोप लगाया गया है।
- (ii) प्राधिकारी ने भारत में स्थित संबद्ध देशों के दूतावासों/उच्चायोगों को उपर्युक्त नियम 5 के उपनियम (5) के अनुसार जांच आरंभ करने से पूर्व याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत एक पूर्ण प्रलेखित याचिका प्राप्त होने की सूचना दी।

- (iii) प्राधिकारी ने सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 के अनुसूची-1 के प्रोपाइलीन ग्लाइकोल के आयातों के संबंध में पाटनरोधी कार्रवाई आरंभ करते हुए तारीख 22 अगस्त, 2003 को भारत के राजपत्र, असाधारण में एक सार्वजनिक सूचना प्रकाशित की ।
- (iv) प्राधिकारी ने ज्ञात निर्यातकों, आयातकों, उद्योग संघों और शिकायतकर्ता को उक्त सार्वजनिक सूचना की प्रति भेजी और उन्हें अपने विचार लिखित रूप में देने का अवसर प्रदान किया।
- (v) प्राधिकारी ने उपरोक्त नियम 6 के उप-नियम(3) के अनुसार याचिका की प्रति सभी ज्ञात निर्यातकों तथा भारत में संबद्ध देशों के दूतावासों/उच्चायोगों को भेजी ।
- (vi) प्राधिकारी ने संबद्ध सूचना प्राप्त करने के लिए यूरोपीय संघ, सिंगापुर, कोरिया गणराज्य और अमरीका के निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावली भेजी:-

1. लिओन्डेल कैमिकल कंपनी, अमरीका
2. शैल इस्टर्न पेट्रोलियम (प्रा0)लि0, सिंगापुर
3. दि डोव कैमिकल कंपनी, अमरीका
4. एस के ओक्सिकैमिकल कं0 लि0, दक्षिण कोरिया
5. मैसर्स रेपसोल डी क्यूमिका, स्पेन

- (vii) मैसर्स शैल इस्टर्न पेट्रोलियम (पी टीई) लि0 (एस ई पी एल), सिंगापुर ने निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर दिया है । कुछेक निर्यातकों/आयातकों ने प्रश्नावली का उत्तर देने के लिए समयावधि बढ़ाने की मांग की थी और प्राधिकारी ने निर्यातकों एवं आयातकों के अनुरोध पर विचार करते हुए प्रश्नावली का उत्तर देने के लिए समयावधि को दो सप्ताह तक बढ़ाया था । मैसर्स रेपसोल, स्पेन और मैसर्स डोव कैमिकल, अमरीका ने घरेलू उद्योग द्वारा दायर आवेदन का उत्तर दिया है किन्तु निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया है और निर्यातक प्रश्नावली में यथा अपेक्षित रूप एवं ढंग में कोई सूचना प्रस्तुत नहीं की है । मैसर्स रेपसोल ने अपने उत्तर में दो परिशिष्ट प्रस्तुत किए हैं किन्तु उनके द्वारा सामान्य मूल्य और भारत के लिए निर्यात कीमत के संबंध में कोई सूचना प्रस्तुत नहीं की है जैसा कि निर्यातक प्रश्नावली में अपेक्षित है । उनके असहयोग को ध्यान में रखते

हुए, प्राधिकारी ने दोनों निर्यातकों को असहयोगी माना है और सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना के अनुसार पाटन मार्जिन निकाला है। तथापि, यूरोपीय संघ के शिष्टमंडल समेत इन निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत तर्कों का उस सीमा तक विश्लेषण किया है जिस सीमा तक उन्हें इस संबद्ध जांच में संगत पाया गया है। इसके अलावा, किसी भी आयातक ने आयातक प्रश्नावली का कोई उत्तर नहीं दिया है।

(viii) नई दिल्ली स्थित संबद्ध देशों के दूतावासों/उच्चायोगों को भी जांच आरंभ होने की सूचना दी गयी थी और उनसे अपने देश के निर्यातकों/उत्पादकों से निर्धारित समय के भीतर प्रश्नावली का उत्तर देने का आग्रह करने का अनुरोध किया गया था।

(ix) प्रश्नावली संबद्ध माल के निम्नलिखित ज्ञात प्रयोक्ताओं/आयातकों को भेजी गयी थी:-

- लुपिन लि० औरंगाबाद 431210
- आनन्द इन्टरप्राइजेज मुम्बई
- रेफनोल रेजिन एंड कैमिकल्स लि० अहमदाबाद 382330
- मुन्द्रा इन्टरप्राइज, बंगलौर 560053
- सी जे शाह एण्ड कं० मुम्बई 400021
- पेप्सी फूड्स लि०, पंजाब
- केवा प्लेवर्स लि०, मुम्बई-400080
- आई सी पी ए हेल्थ प्रोडक्ट्स लि०, गुजरात
- एस एच केलकर एण्ड कं. लि. मुम्बई 400080
- अम्बुजा प्लास्टिक्स प्रा० लि० दिल्ली 110041
- आमटेक पॉलीमर्स हरियाणा
- जनार्धन कैम प्रा० लि० मुम्बई
- मोरेक्स अड्हेसिबज प्रा० लि०, मुम्बई

- मोरेक्स पेट्रोकेम प्रा० लि०, मुम्बई
- नेटवर्क पॉलिमर्स प्रा० लि०, महाराष्ट्र
- बाबूल प्रोडक्ट्स लि० गुजरात, नॉर्थ
- गोपाल इन्टरप्राइजेज मुम्बई
- के उत्तमलाल एण्ड कं० मुम्बई 400009
- पी फिजर लि० मुम्बई 400102
- मैकेम्को इण्डस्ट्रीज मुम्बई 400013
- ज्वैल पॉलिमर्स प्रा० लि० पालघाट 401404
- सत्येन पॉलिमर्स सिल्वासा
- दुजोदवाला पेपर कैमिकल्स लि० महाराष्ट्र
- कैम ट्रेड मुम्बई 400003
- एशियन पेन्ट्स इंडिया लि० मुम्बई 400078

(x) प्राधिकारी ने अपने द्वारा रखी गयी सार्वजनिक फाइल के रूप में विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा दिए गए साक्ष्यों के अगोपनीय अंश उपलब्ध रखे और उन्हें विभिन्न हितबद्ध पार्टियों को देखने के लिए खुला रखा ।

(xi) ***** यह चिह्न इस अधिसूचना में हितबद्ध पार्टियों द्वारा गोपनीय आधार पर दी गयी सूचना तथा नियमों के अंतर्गत प्राधिकारी द्वारा उसे गोपनीय ही माने जाने का द्योतक है:

(xii) पाटन की जांच एवं क्षति के लिए 1 अप्रैल, 2002 से 31 मार्च, 2003 तक की अवधि शामिल है (जिसे जांच की अवधि अथवा पी ओ आई कहा गया है) क्षति के विश्लेषण के संदर्भ में रूझानों की जांच हेतु 1 अप्रैल, 2000 से जांच की अंतिम अवधि शामिल है (जिसे विचाराधीन अवधि भी कहा गया है)

- (xiii) प्राधिकारी ने सभी हितबद्ध पक्षकारों को अपने विचार 25.5.2004 को मौखिक रूप से प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया। मौखिक रूप से अपने विचार प्रस्तुत करने वाले सभी पक्षकारों से व्यक्त किए गए विचारों को लिखित में दायर करने का अनुरोध किया गया था। प्राधिकारी ने उनके द्वारा प्रस्तुत किए गए आंकड़ों का घरेलू सत्यापन एवं निर्यातकों का सत्यापन किया था। प्राधिकारी ने पाटन का निर्धारण करने और परिणामी क्षति के संबंध में अंतिम जांच परिणामों के प्रयोजनार्थ आवश्यक समझी गयी सभी सूचना मांगी और उनका सत्यापन किया। प्राधिकारी ने आवश्यक समझी गयी सीमा तक घरेलू उद्योग की मौके पर जांच की। प्राधिकारी ने केवल सहयोगी निर्यातक मैसर्स एस ई पी एल, सिंगापुर द्वारा प्रस्तुत किए गए आंकड़ों का मौके पर सत्यापन किया और उनकी जांच भी की थी। उपरोक्त नियमों के नियम 16 के अनुसार इन निष्कर्षों के लिए विचार किए गए अनिवार्य तथ्यों/आधार का खुलासा 26.7.04 को ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों को किया गया था और उन पर मिली टिप्पणियों पर भी अंतिम निष्कर्षों में विधिवत् विचार किया जाता है। प्रकटन विवरण की गोपनीय प्रतियां घरेलू उद्योग को जारी की गयी थीं जिनमें प्राधिकारी द्वारा परिकलित नुकसान रहित कीमत का उल्लेख किया गया था और ये प्रतियां सहयोगी निर्यातक को भी भेजी गयी थीं जिनमें विभिन्न समायोजनों समेत सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत का उल्लेख किया गया था।
- (xiv) याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत सूचना के आधार पर आमतौर से स्वीकार्य लेखा सिद्धांतों (जी ए ए पी) के आधार पर भारत में संबद्ध वस्तु की ईष्टतम उत्पादन लागत और निर्माण एवं बिक्री लागत निकालने के लिए घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत को निकालने के लिए घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत का विश्लेषण भी किया गया था ताकि यह पता लगाया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा।
- (xv) जांच शुरुआत करने संबंधी नोटिस की प्रतियां व्यापक परिचालन हेतु फिक्का, सीआईआई, एसोचेम इत्यादि को भी भेजी गयी थीं।

(ख) विचाराधीन उत्पाद

2. वर्तमान मामले में विचाराधीन उत्पाद सभी ग्रेडों का प्रोपिलेन ग्लाइकोल है (जिसे आगे संबद्ध वस्तु भी कहा गया है)। प्रोपिलेन ग्लाइकोल का विनिर्माण प्रोपिलेन आक्साइड के साथ जल के उच्च ताप और दाब की अभिक्रिया द्वारा होता है। प्रोपिलेन ग्लाइकोल का प्रयोग औद्योगिक अनुप्रयोगों के लिए किया जाता है जैसे कि पोलिस्टर रेजिन, औद्योगिक हिमीकरण विरोधी अनुप्रयोगों एवं भेषज उद्योगों में। यह उत्पाद सीमाशुल्क टैरिफ कोड 29053200 के अन्तर्गत वर्गीकृत है।

(ग) समान वस्तु

3. याचिकाकर्ता ने दावा किया है कि उसके द्वारा उत्पादित माल संबद्ध देशों के मूल के अथवा वहां से निर्यातित माल के समान माल है। याचिकाकर्ता द्वारा उत्पादित संबद्ध माल और संबद्ध देशों से निर्यातित माल में कोई खास अंतर नहीं है। याचिकाकर्ता का यह दावा है कि वे दोनों तकनीकी एवं वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थानीय हैं। पाटनरोधी नियमों का नियम 2(घ) यह स्पष्ट करता है कि "समान वस्तु" का तात्पर्य उस वस्तु से है जो जांच के अधीन उत्पाद से हर प्रकार से समरूप या समान हो अथवा ऐसी वस्तु की अनुपस्थिति में कोई अन्य वस्तु जिसके लक्षण जांच के अधीन वस्तुओं से काफी मिलते जुलते हों। यह प्रमाणित करने के लिए कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध माल संबद्ध देशों से निर्यातित माल के समान माल है, प्राधिकारी ने विशेषताओं जैसे तकनीकी विशिष्टताएं, विनिर्माण प्रक्रियाएं, कार्य एवं उपयोग और टैरिफ वर्गीकरण पर विचार किया है। मै0 डोव केमिकल एवं ईयू के प्रतिनिधिमंडल के अलावा और किसी हितबद्ध पार्टी ने समान वस्तु के मुद्दे पर कोई तर्क नहीं दिया है। मै0 डोव केमिकल यूएसए एवं ईयू के प्रतिनिधि मंडल की (प्रकटन विवरण के बाद) यह राय है कि उनके द्वारा निर्यातित उत्पाद प्रोपिलेन ग्लाइकोल के यूएसपी/ईपी ग्रेड का है, जिसका प्रयोग खाद्य पदार्थ एवं भेषज में किया जाता है और उच्चतर मूल्य का है। तथापि, इन निर्यातकों ने अपने तर्क के समर्थन में किसी साक्ष्य के साथ कोई उत्तर प्रस्तुत नहीं किया है। इसके विपरीत, मै0 एसईपीएल के मौके पर निरीक्षण से यह नोट किया गया है कि संबद्ध वस्तु की हैंडलिंग के कारण कुछ मामूली अन्तर के अलावा औद्योगिक एवं भेषज ग्रेड से संबंधित संबद्ध वस्तु के निर्माण की लागतों में कोई अन्तर नहीं है। इसके अतिरिक्त, घरेलू उद्योग ने अपने लिखित जवाब में विशेषरूप से यह उल्लेख किया है कि वे उत्पादन के 60% का विनिर्माण भेषज एवं खाद्य ग्रेडों के गैर औद्योगिक ग्रेड के रूप में करते हैं, यद्यपि इन ग्रेडों की कीमत में कोई खास अन्तर नहीं है। विस्तृत जांच पड़ताल के आधार पर प्राधिकारी यह बात नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित प्रोपिलेन ग्लाइकोल में ऐसी विशेषताएं हैं जो संबद्ध देशों से आयातित माल की विशेषताओं के समान हैं। उपर्युक्त के मद्दे नजर, प्राधिकारी का यह मानना है कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित और संबद्ध देशों से आयात किए जा रहे एवं संबद्ध देशों में बेचे जा रहे प्रोपिलेन ग्लाइकोल नियमों के अर्थ के भीतर समान वस्तुएं हैं।

(घ) घरेलू उद्योग

4. याचिका मै0 मनाली पेट्रोकेमिकल्स लिमिटेड, चेन्नई द्वारा दायर की गयी है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि याचिकाकर्ता संबद्ध वस्तु का भारत में एक मात्र उत्पादक है और इसलिए नियम 2(ख) के साथ पठित उक्त नियमों के नियम 5(3) के अनुसार याचिका दायर करने की स्थिति में है।

(ड.0 न्यूनतम सीमा

5. जहां तक यह निर्धारित करने का संबंध है कि जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों से आयात न्यूनतम सीमा से अधिक रहे हैं, प्राधिकारी ने डीजीसीआईएस द्वारा उपलब्ध कराए गए संबद्ध देशों से सौदेवार आंकड़ों और सहयोगी निर्यातकों द्वारा उपलब्ध कराए गए वास्तविक निर्यातों का उल्लेख किया है। आंकड़ों की जांच करने के बाद प्राधिकारी यह मानते हैं कि सभी संबद्ध देशों से हुए आयात उनकी मात्रा के संबंध में न्यूनतम सीमा से अधिक हैं।

(च) पाटन

6. सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 9क (1) (ग)। के तहत किसी वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य का अर्थ है :-

1. सामान्य व्यापार के दौरान समान वस्तुओं के लिए उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियम के अनुसार यथानिर्दिष्ट तुलनात्मक मूल्य जबकि ऐसी वस्तु निर्यातक देश या क्षेत्र में उपभोग के लिए आशयित हो: या
2. जहां निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में सामान्य व्यापार के दौरान समान वस्तु की कोई बिक्री नहीं हो या विशेष बाजार दशा के कारण अथवा निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में बिक्रियों की कम मात्रा के कारण, ऐसी बिक्रियों की वजह से समुचित तुलना नहीं हो सकती हो तो सामान्य मूल्य या तो:-

(क) निर्यातक देश या क्षेत्र से या किसी उचित तीसरे देश से आयात किए जाने पर समान वस्तु की उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथा निश्चित तुलनात्मक प्रतिनिध मूल्य; या

(ख) उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथा निश्चित प्रशासनिक, बिक्री और सामान्य लागतों एवं लाभों के लिए उचित वृद्धि के साथ वस्तु मूल के देश में उक्त वस्तु के उत्पादन की लागतः

बशर्ते कि वस्तु का आयात जब मूलता के देश से भिन्न अन्य किसी देश से किया गया हो तथा जहाँ वस्तु निर्यात के देश से केवल गुजरी हो या ऐसी वस्तु निर्यात के देश में उत्पादित नहीं होती हो या निर्यात के देश में उसका कोई तुलनात्मक मूल्य नहीं हो तो इसके सामान्य मूल्य का निर्धारण मूलता के देश में इसके मूल्य के संदर्भ में किया जाएगा।

7. धारा 9क(1) (ग) के अनुसार, प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य के निर्धारण के उद्देश्य से सभी ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावली भेजी है। केवल एक निर्यातक मै0 एसईपीएल, सिंगापुर ने निर्यातकों के लिए पत्र एवं निर्यातक प्रश्नावली के अनुसार निर्धारित प्रपत्र में और ढंग से प्रश्नावली का उत्तर दिया है।

च.1 सिंगापुर (क) सहयोग

8. मै0 शेल इस्टर्न पेट्रोलियम लि0 (एसईपीएल)-मै0 एसईपीएल ने निर्यातक प्रश्नावली में उल्लिखित विभिन्न परिस्थितियों के संबंध में सूचना प्रदान करते हुए निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर दिया है। उन्होंने उनके द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों के सत्यापन का भी प्रस्ताव किया है और प्राधिकारी ने उत्पादन और निर्यातक दोनों के परिसरों का मौके पर निरीक्षण करने के बाद आंकड़ों का सत्यापन किया है।

(ख) सामान्य मूल्य एवं निर्यात कीमत

9. घरेलू उद्योग द्वारा यह तर्क दिया गया है कि उत्पादक और निर्यातक दोनों की अलग-अलग ईकाइयाँ हैं, इसलिए उनके द्वारा दिये गये जवाब दो होने चाहिए। यह भी आरोप लगाया गया है कि मै0 सेराया केमिकल्स सिंगापुर (पीटीई) लि0 की ओर से एसईपीएल को इस आशय का कोई प्राधिकार नहीं दिया गया था कि वह मै0 सेराया की ओर से कोई दायित्व ले। प्राधिकारी ने इस संबंध में हितबद्ध पार्टियों द्वारा दी गयी सूचना का सत्यापन किया है और यह निष्कर्ष निकाला है कि मै0 सेराया केमिकल्स सांविधिक लेखों के भीतर पूर्ण संघटित लागत केन्द्र है और सिंगापुर के भीतर एसईपीएल के साथ एकल कर सत्ता के रूप में है इसलिए प्राधिकारी ने उत्पादक एवं निर्यातक के उत्तर को इस संबद्ध जाँच के लिए दोनों कम्पनियों से दिया गया सामूहिक उत्तर माना है। संबंधित सहायक कम्पनी अथवा संबंधित कम्पनी अथवा संबंधी कम्पनी के जरिये निविष्टि प्राप्त करने के आरोप के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि मै0 एसईपीएल निविष्टि प्रोपिलेन एक-दूसरी कम्पनी *** के जरिये संदर्भ मूल्य पर प्राप्त करता है जो कि उत्तम संयंत्रों के लिए पोलिथीलेन एवं इथीलेन के बीच मार्जिन की हिस्सेदारी पर आधारित हैं। जबकि दक्षिण एवं एशिया में इथिलेन की मौके पर कीमत के लिए मामूली प्रतिशत एवं यूएसए में संविदा मूल्य प्रदान किया जाता है जो कि पुनः *** द्वारा प्रयुक्त मुख्य रूप से गोपनीय आँकड़ों पर आधारित हैं। इसके अलावा दस्तावेजों की जाँच के बाद यह भी निष्कर्ष निकाला गया है कि निविष्टि की ये कीमतें संविदा गत उचित मानक पर आधारित हैं जो पुनः पहले उल्लिखित मानक संबंधी मापदण्डों पर आधारित हैं जो उस निविष्टि के सभी प्रयोक्ताओं पर लागू होते हैं और इसलिए संबद्ध वस्तु के उत्पादन के लिए निविष्टि की खरीद में संबंधकारी मूल्य शामिल नहीं है।

10. प्राधिकारी द्वारा निर्यातक के उत्तर की जांच की गयी है। निर्यातक प्रश्नावली के उत्तर के अनुसार उत्पादन लागत के संबंध में अनुबन्ध VIII घरेलू बिक्री में सौदेवार बिक्री सूचना के संबंध में परिशिष्ट-1 की जांच के बाद यह निर्धारित किया गया है कि घरेलू बिक्रियाँ व्यापार की सामान्य

प्रक्रिया में की गई हैं। प्राधिकारी ने यह भी निर्धारित किया है कि सामान्य कीमत के निर्धारण हेतु घरेलू बिक्रियाँ पर्याप्त मात्रा में हुई हैं क्योंकि इसमें आयातक देश को विचाराधीन उत्पाद की बिक्री का 5% से अधिक शामिल होता है। प्राधिकारी ने निर्यातक द्वारा प्राधिकारी के समक्ष प्रस्तुत अपने अनुरोध में प्रस्तुत सूचना का मौके पर जाकर निरीक्षण करके उसके द्वारा प्रस्तुत किए गए आंकड़ों का आगे सत्यापन किया है। प्राधिकारी ने निर्यातक द्वारा किये गये दावे के अनुसार कारखाना स्तर पर किये जाने वाले सभी आवश्यक समायोजनों के बाद सहयोग करने वाले निर्यातक के लिए सामान्य कीमत का निर्धारण किया है। इसी तरह प्राधिकारी ने कारखाना स्तर पर निवल निर्यात कीमत निकालने के लिए निर्यातक द्वारा किये गये दावे के अनुसार विभिन्न समायोजनों की अनुमति देने के बाद सहयोगी निर्यातक की कारखाना स्तर पर निर्यात कीमत का निर्धारण किया है।

(ग) तुलना

11. कारखाना बाह्य स्तर पर सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत के बीच उचित तुलना के प्रयोजनार्थ उन अन्तरों, जिनके दावे किए गए और कीमतों और कीमत तुलनीयता को प्रभावित करने के लिए प्रदर्शित किया गया, के लिए समायोजनों के रूप में यथोचित अनुमति दी गई है। सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अंतर्गत बनाए गए पाटनरोधी नियमों के अनुबंध-1 के पैरा 6 के अनुसार परिवहन, बीमा, संभलाई, लदान, ऋण लागतों और अन्य कार्यों के संबंध में ये समायोजन, जहाँ भी उपयुक्त हो, किए गए थे।

(घ) पाटन मार्जिन

12. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के नियम 6(IV) के अनुसार पाटन मार्जिन भारित औसत निर्यात कीमत के साथ भारित औसत सामान्य मूल्यों के आधार पर निर्धारित किया गया था। तुलना से जांच अवधि के दौरान निर्यातक द्वारा संबद्ध वस्तु के पाटन की मौजूदगी मालूम हुई। निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में अभिव्यक्त भारित औसत पाटन मार्जिन का निर्धारण 7.64% किया गया था।

च.2 सिंगापुर के अन्य निर्यातक:

13. सिंगापुर के किसी भी निर्यातक ने सूचना के लिए प्राधिकारी के अनुरोध का उत्तर नहीं दिया है। सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत के निर्धारण के संबंध में याचिकाकर्ता द्वारा किये गये दावे पर भी किसी अन्य हितबद्ध पक्ष (न) द्वारा विवाद नहीं किया गया है। अतः सिंगापुर से संबद्ध वस्तु के असहयोगी/अन्य निर्यातकों के मामले में पाटन मार्जिन का मूल्यांकन प्राधिकारी द्वारा उचित उपलब्ध सूचना के अनुसार **** अम0 डालर0/मी0 टन के रूप में सामान्य मूल्य के निर्धारण के पश्चात निर्यात कीमत का **** अम0 डालर/मी0 टन अथवा और निर्यात कीमत जांच अवधि के दौरान भारत को सिंगापुर की भारित औसत निर्यात कीमत को ध्यान में रखकर *** अम0 डालर/मी0 टन की गई है।

च.3 यूरोपीय संघ

(क) सहयोग

14. यूरोपीय संघ की केवल एक कम्पनी, निर्यातक उत्पादक मै0 रैपसोल वाईपीएफ ने केवल कुछ सूचना प्रस्तुत की है और उन्होंने निर्यातक प्रश्नावली में यथा उल्लिखित रूप में और उस तरीके से उत्तर प्रस्तुत नहीं किया है। उन्होंने परिशिष्ट-1 के संबंध में पूरी सूचना प्रस्तुत नहीं की है जिससे उद्गम के देश में सौदेवार बिक्रियों की सूचना मालूम हो सके। उन्होंने जांच अवधि के दौरान भारत से संबद्ध वस्तु के निर्यातों के बारे में कुछ सूचना प्रस्तुत की है लेकिन उन्होंने यह सूचना निर्यातक की प्रश्नावली के अनुसार निर्धारित रूप और तरीके से साक्ष्यों/बीजकों के साथ प्रस्तुत नहीं की है। इसके अतिरिक्त उन्होंने 2ए प्रस्तुत नहीं किया है जिससे भारत को घरेलू उद्योग और अन्य देशों के निर्यातकों के निर्यातों के अलग-अलग आंकड़ों के साथ कम्पनी की संबद्ध माल की बिक्रियाँ मालूम हो सकें। इसी प्रकार परिशिष्ट 3 भी प्रस्तुत नहीं किया गया है जो फर्म के प्रचालन आंकड़ों के बारे में सूचना उपलब्ध कराता है। यद्यपि उन्होंने भारत और ईयू के लिए बिक्री कीमत ढांचे के संबंध में कुछ सूचना प्रस्तुत की है तथापि उन्होंने अपने बिक्री कीमत ढांचे में दावा किए गए विभिन्न समायोजनों को प्रकट करने वाली कोई सूचना प्रस्तुत नहीं की है। इसके अतिरिक्त परिशिष्ट 4 और परिशिष्ट 5 से संबंधित सूचना भी प्रस्तुत नहीं की गई है जिससे स्थापित क्षमता, उत्पादन, बिक्रियाँ और कच्ची सामग्री की खपत तथा पुनर्समायोजन की जानकारी मिलती। इसके अलावा परिशिष्ट-6 में अपेक्षित कच्ची सामग्री की खपत और परिशिष्ट-7 में यथा अपेक्षित खर्च का आबंटन और विभाजन का विवरण प्रस्तुत नहीं किया गया है। इसके अतिरिक्त परिशिष्ट - 8 की अपेक्षा के अनुसार उत्पादन लागत और परिशिष्ट -8क और 8ख में यथा अपेक्षित कारखाना लागत और भारत को निर्यात लाभ तथा घरेलू बिक्रियों का विवरण भी नहीं दिया गया है। इसके बिना सामान्य कीमत के निर्धारण के लिए घरेलू बिक्रियों हेतु व्यापार की सामान्य प्रक्रिया की जांच करना संभव नहीं है। इसके अलावा परिशिष्ट- 9 की अपेक्षा के अनुसार एसजीए ऊपरी खर्चों के आबंटन का विवरण भी नहीं दिया गया है। वास्तव में निर्यातकों द्वारा निर्यातक प्रश्नावली में किए गए समस्त निवेदन कुल मिलाकर गलत हैं। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि प्राधिकारी द्वारा अगोपनीय सारांश के साथ-साथ निर्यातक प्रश्नावली में यथा निर्धारित प्रपत्र और ढंग से पूरा उत्तर प्रस्तुत करने के लिए अनुस्मरण कराया गया था और इस तथ्य का अनुस्मरण भी कराया गया था कि यदि सूचना उचित समय के भीतर नहीं दी गई हो, प्राधिकारी घरेलू उद्योग द्वारा जांच की शुरुआत किए जाने के लिए दिए गए आवेदन में दी गई जानकारी सहित उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निर्धारण करने के लिए स्वतंत्र होंगे। प्राधिकारी नोट करते हैं कि फर्म ने दिनांक 25 जून, 2004 के अपने पत्राचार में यह उल्लेख किया है कि उसने "अपनी स्थिति को दर्शाने के लिए आवश्यक सूचना" प्रस्तुत कर दी है। उन्होंने आगे बताया है कि उन्हें ईसीडीजी व्यापार बी.2 से सलाह प्राप्त हुई है और वे इस मामले पर उनके साथ कार्य कर रहे हैं। निर्यातक प्रश्नावली के उत्तर में सूचना प्रस्तुत न करने की दृष्टि से प्राधिकारी निर्यातकों को पाटनरोधी करार के अर्थों में असहयोगी मानते हैं।

ख. सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत:

15. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि निर्यातक ने निर्यातक प्रश्नावली की अपेक्षा के अनुसार उस रूप और तरीके से सूचना प्रस्तुत नहीं की है। चूंकि विभिन्न परिशिष्टों (विशेषतः I और VIII) के अन्तर्गत संगत सूचना प्रस्तुत नहीं की गई थी इसलिए प्राधिकारी यह निर्धारण नहीं कर सकते

कि व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में क्या घरेलू बिक्रियाँ हुई हैं। सामान्य मूल्य के निर्धारण के संबंध में याचिकाकर्ता द्वारा किए गए दावे पर भी निर्यातक अथवा अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने विवाद नहीं किया है। इन परिस्थितियों में सामान्य मूल्य नियमों के अनुसार पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के अन्तर्गत उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निर्धारित किया जाता है। इसलिए देश अथवा उद्गम स्थान में उत्पादन की अनुमानित लागतों और बिक्रियों, प्रशासनिक तथा सामान्य खर्चों और उचित समायोजन करने के बाद उचित लाभ से संबंधित उपलब्ध सूचना को निर्यातक के लिए संबद्ध वस्तु का सामान्य मूल्य परिकलित करने के लिए आधार के रूप में ली गई है। कारखाना बाह्य स्तर पर निर्यात कीमत का निर्धारण डीजीसीआईएस से उपलब्ध हुए आंकड़ों और उपलब्ध तथ्यों के अनुसार किए गए समायोजनों से किया गया है।

(ग) तुलना

16. कारखाना बाह्य स्तर पर सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत के बीच उचित तुलना करने के प्रयोजनार्थ परिवहन, बीमा, संभलाई और अन्य लागतों के संबंध में, जहाँ उचित था, यथोचित अनुमति दी गई है।

17. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 के नियम 6(IV) के अनुसार पाटन मार्जिन कारखाना बाह्य स्तर पर भारित औसत निर्यात कीमत के साथ परिगणित सामान्य मूल्यों के आधार पर निर्धारित किया गया था। तुलना से जांच अवधि के दौरान निर्यातक द्वारा संबद्ध वस्तु के पाटन की मौजूदगी मालूम हुई। निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में अभिव्यक्त भारित औसत पाटन मार्जिन का निर्धारण 30.15% किया गया था।

च.4 ईयू के अन्य निर्यातक

18. ईयू के किसी भी निर्यातक ने सूचना के लिए प्राधिकारी के अनुरोध का उत्तर नहीं दिया है। सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत के निर्धारण के संबंध में याचिकाकर्ता द्वारा किये गये दावे पर भी किसी अन्य हितबद्ध पक्ष (यें) द्वारा विवाद नहीं किया गया है। अतः ईयू से संबद्ध वस्तु के असहयोगी/अन्य निर्यातकों के मामले में पाटन मार्जिन का मूल्यांकन प्राधिकारी द्वारा उचित उपलब्ध सूचना के अनुसार **** अम0 डालर0/मी0 टन के रूप में सामान्य मूल्य के निर्धारण के पश्चात निर्यात कीमत का **** अम0 डालर/मी0 टन अथवा 30.15% और निर्यात कीमत जांच अवधि के दौरान भारत को ईयू की भारित औसत निर्यात कीमत को ध्यान में रखकर *** अम0 डालर/मी0 टन की गई है।

च.5 अमरीका और कोरिया गणराज्य

(क) सहयोग

19. दोनों संयुक्त राज्य निर्यातक-उत्पादकों में से किसी ने भी निर्यातक की प्रश्नावली का कोई उत्तर नहीं दिया है। तथापि मै0 डोरू कैमिकल ने समान वस्तु, अमरीका से आयातों की मात्रा और घरेलू उद्योग को हुई क्षति, जिस पर उपयुक्त शीर्षों के तहत कार्रवाई की गई है, के संबंध में कुछ तर्क प्रस्तुत किए हैं। इसके अतिरिक्त, प्राधिकारी द्वारा इस आशय के अनुस्मारक दिए जाने के

बावजूद निर्यातक प्रश्नावली का कोई उत्तर नहीं दिया गया है। दक्षिण कोरिया के एकमात्र निर्यातकर्ता उत्पादक से भी कोई सहयोग नहीं मिला है।

(ख) सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत:

20. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि निर्यातक ने निर्यातक प्रश्नावली की अपेक्षा के अनुसार उस रूप और तरीके से सूचना प्रस्तुत नहीं की है। चूंकि विभिन्न परिशिष्टों (विशेषतः I और VIII) के अन्तर्गत संगत सूचना प्रस्तुत नहीं की गई थी इसलिए प्राधिकारी यह निर्धारण नहीं कर सकते कि व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में क्या घरेलू बिक्रियाँ हुई हैं। सामान्य मूल्य के निर्धारण के संबंध में याचिकाकर्ता द्वारा किए गए दावे पर भी निर्यातक अथवा अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने विवाद नहीं किया है। इन परिस्थितियों में सामान्य मूल्य नियमों के अनुसार पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के अन्तर्गत उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निर्धारित किया जाता है। इसलिए देश अथवा उद्गम स्थान में उत्पादन की अनुमानित लागतों और बिक्रियों, प्रशासनिक तथा सामान्य खर्चों और उचित समायोजन करने के बाद उचित लाभ से संबंधित उपलब्ध सूचना को संयुक्त राज्य और कोरिया जन.गण. के निर्यातक के लिए अलग से संबद्ध वस्तु का सामान्य मूल्य परिकलित करने के लिए आधार के रूप में ली गई है। कारखाना बाह्य स्तर पर निर्यात कीमत का निर्धारण दोनों देशों के लिए अलग-अलग डीजीसीआई एंड एस द्वारा उपलब्ध कराई गई भारत औसत निर्यात कीमत को ध्यान में रखते हुए किया गया है।

तुलना:

21. कारखाना बाह्य स्तर पर सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत के बीच उचित तुलना करने के प्रयोजनार्थ परिवहन, बीमा, संभलाई और अन्य लागतों के संबंध में, जहाँ उचित था, यथोचित अनुमति दी गई है।

पाटन मार्जिन

22. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध -1 के नियम 6 (iv) के अनुसार संयुक्त राज्य और कोरिया जन.गण. के निर्यातकों के लिए पाटन मार्जिन कारखाना बाह्य स्तर पर भारत औसत निर्यात कीमत के साथ परिगणित सामान्य मूल्य के आधार पर निर्धारित किया गया था। तुलना से जांच अवधि के दौरान संयुक्त राज्य और कोरिया जन.गण. के निर्यातकों द्वारा संबद्ध वस्तु के पाटन की मौजूदगी मालूम हुई। निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में अभिव्यक्त भारत औसत पाटन मार्जिन का निर्धारण किया गया है और यह संयुक्त राज्य के लिए 46.87% और कोरिया जन.गण. के लिए 29.46% है। चूंकि संयुक्त राज्य और कोरिया जन.गण. के निर्यातकों से कोई सहयोग नहीं मिला था इसलिए संयुक्त राज्य और कोरिया जन.गण. के लिए समग्र रूप से पाटन मार्जिन निर्धारित किया गया है।

| देश | उत्पादक/निर्यातक का नाम | सामान्य मूल्य | निर्यात कीमत | पाटन मार्जिन % |
|-----|-------------------------|---------------|--------------|----------------|
| | | | | |

| | | | | |
|----------|---------------------------|------|------|-------|
| सिंगापुर | मै. एसइपीएल कार्पो. | **** | **** | 7.64 |
| | अन्य उत्पादक | **** | **** | 7.64 |
| ईयू | मै. रेपसोल वाईपीएफ | **** | **** | 30.15 |
| | सभी अन्य उत्पादक/निर्यातक | **** | **** | 30.15 |
| अमरीका | सभी उत्पादक/निर्यातक | **** | **** | 46.87 |
| कोरिया | सभी उत्पादक/निर्यातक | **** | **** | 29.46 |

छ. क्षति

क. घरेलू खपत/माँग

23. घरेलू बाजार में विचाराधीन उत्पाद की घरेलू खपत/माँग की गणना करने के लिए, निर्दिष्ट प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की बिक्री मात्राओं और घरेलू बाजार में हुए कुल आयातों को जोड़ा है। इस आधार पर, घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु की घरेलू माँग या खपत में 2000-01 में 14626 से 18719 मी. टन की वृद्धि हुई है जिससे 27.08% की वृद्धि प्रदर्शित होती है।

| घरेलू खपत/माँग | | | |
|----------------|----------|----------|-----------|
| | 2000-01 | 2001-02 | जाँच अवधि |
| घरेलू माँग | 14626.35 | 17551.24 | 18719.06 |
| सूची | 100 | 120 | 127.98 |

24. (क) संबंधित आयातों के प्रभावों का समग्र आकलन

(i) प्राधिकारी, ने इस बात की जांच की है कि क्या पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 3.3 और सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अंतर्गत पाटनरोधी नियमावली के नियम 11 के अनुसार अमरीका, ईयू, कोरिया और सिंगापुर के मूल की संबद्ध वस्तुओं के आयातों का समग्र रूप से आकलन किया जाना चाहिए।

(ii) संबंधित देशों में से प्रत्येक से हुए आयातों से संबंधित निर्धारित पास मार्जिन पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 5.8 तथा पाटनरोधी नियमावली के नियम 14 में यथापरिभाषित निर्धारित न्यूनतम स्तर से अधिक था और इन देशों में से प्रत्येक से हुए आयातों की मात्रा नगण्य नहीं थी।

(iii) प्रतिस्पर्धा की स्थितियों के बारे में, जाँच से यह पता लगा था कि विभिन्न देशों से आयातित संबद्ध वस्तुओं का प्रयोग उन्हीं प्रयोक्ताओं द्वारा किया गया और आयातित संबद्ध वस्तु का आयात समान कीमत बैंड पर किया जा रहा था जिससे यह संकेत मिलता है कि सभी आवश्यक भौतिक एवं तकनीकी विशेषताएं एक समान हैं। प्राधिकारी आगे यह नोट करते हैं कि विभिन्न संबद्ध देशों से आयातित संबद्ध वस्तु और घरेलू उद्योग द्वारा घरेलू बाजार में बेची गयी वस्तुएं प्रतिस्थापनीय थीं और समान वाणिज्यिक स्थितियों के अंतर्गत तुलनीय बिक्री श्रृंखलाओं के जरिए विचाराधीन

अवधि के दौरान इनकी बिक्री की गई थी। प्राधिकारी आगे नोट करते हैं कि किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने संबद्ध देशों में से किसी देश को हटाए जाने के बारे में कोई तर्क प्रस्तुत नहीं किया है।

(iv) उपर्युक्त के आलोक में, प्राधिकारी का यह विचार है कि पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 3.3 और नियम 11 के अंतर्गत अनुबंध II के पैरा iii के अनुसार निर्धारित मापदण्डों को पूरा किया गया था और इसलिए संबंधित देशों से हुए आयातों की समग्र रूप से जांच की जानी चाहिए।

(ख) संबद्ध देशों के मूल के आयात

मात्रा

25. विचाराधीन अवधि के दौरान घरेलू बाजार में संबद्ध देशों से विचाराधीन उत्पाद के आयातों की मात्रा में 52% की वृद्धि हुई है। प्राधिकारी आगे नोट करते हैं कि विचाराधीन अवधि के दौरान घरेलू खपत में 28% की वृद्धि हुई है।

| संबद्ध वस्तु के आयात की मात्रा(संबद्ध देश एवं असंबद्ध देश) मी.टन | | | |
|---|---------|---------|-------------|
| | 2000-01 | 2001-02 | (जाँच अवधि) |
| ईयू | 231 | 453 | 334 |
| कोरिया गणराज्य | 382 | 217 | 598 |
| यूएसए | 2111 | 1711 | 2668 |
| सिंगापुर | 1783 | 3181.9 | 3233.7 |
| संबद्ध देश | 4507 | 5562.9 | 6833.088 |
| असंबद्ध देश | 113.6 | 210.63 | 80 |
| कुल आयात | 4620.6 | 5773.5 | 6913.088 |

(ग) बाजार हिस्सा

26. विचाराधीन अवधि के दौरान कुल मांग में संबद्ध देशों से हुए पाटित आयातों के घरेलू बाजार हिस्से में 20 प्रतिशत बिन्दुओं की वृद्धि हुई थी। पाटित आयातों का बाजार हिस्सा 2000-01 में 30.8% से बढ़कर 2001-02 में 31.7% और जांच अवधि के दौरान 37.2% हो गया है।

| घरेलू उत्पादन के अनुपात के रूप में संबद्ध देशों से हुए आयातों का बाजार हिस्सा | | | |
|---|---------|---------|---------|
| | 2000-01 | 2001-02 | 2002-03 |
| % घरेलू उत्पादन | 45.04 | 47.23 | 57.88 |

| घरेलू मांग के अनुपात के रूप में संबद्ध देशों से हुए आयातों का बाजार हिस्सा | | | |
|--|---------|---------|---------|
| | 2000-01 | 2001-02 | 2002-03 |
| % घरेलू मांग | 30.8 | 31.7 | 37.2 |

27. उपर्युक्त जांच के आधार पर, प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि कुल मांग के हिस्से के रूप में संबद्ध देशों से पाटित आयातों के बाजार हिस्से में भारी वृद्धि हुई है और इसमें पिछले वर्षों की तुलना में जांच अवधि के दौरान महत्वपूर्ण ढंग से वृद्धि हुई है जबकि घरेलू उद्योग के हिस्से में कमी आयी है। प्राधिकारी उक्त साक्ष्यों की जांच करने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के बढ़े हुए आयातों के कारण घरेलू उद्योग को क्षति की स्थिति का सामना करना पड़ रहा है।

(घ) कीमतें

विचाराधीन अवधि के दौरान कीमत की गणना

28. वर्ष 2001-02 और जांच अवधि के बीच संबद्ध देशों के मूल के आयातों की औसत सीआईएफ कीमतों में विचाराधीन अवधि के दौरान 6.6% बिन्दुओं की भारी कमी हुई है। यह कमी विचाराधीन अवधि के दौरान लगातार बनी रही है।

| पाटित आयातों की औसत कीमत सी आई एफ | | | |
|-----------------------------------|---------|---------|---------|
| | 2000-01 | 2001-02 | 2002-03 |
| रू./मी. टन | **** | **** | **** |
| पाटित आयातों की औसत कमी | | | |
| | 2000-01 | 2001-02 | 2002-03 |
| सूचीबद्ध | 100.0 | 93.2 | 93.4 |

(ड.) कीमत में कटौती

29. संबंधित उत्पाद की तुलनीय किस्मों की तुलना निर्यातक उत्पादकों और घरेलू उद्योग की घरेलू बाजार में व्यापार के समान स्तर पर औसत बिक्री कीमतों, असंबद्ध उपभोक्ताओं को दी गई छूटों एवं करों के निवल जोड़ के बीच की गई थीं।

घरेलू उद्योग की कीमतों का निर्धारण कारखाना द्वार स्तर पर किया गया था। संबद्ध देशों की परिकलित सी आई एफ कीमतें आयात किए जाने के पश्चात आधारभूत सीमाशुल्क को शामिल करते हुए अनुप्रयोज्य शुल्कों हेतु समायोजित कर ली गयी थीं। जांच अवधि के दौरान इस प्रकार की तुलना से प्रदर्शित होता है कि संबद्ध देशों के मूल की संबद्ध वस्तु को घरेलू बाजार में ऐसी कीमतों पर बेचा गया जिन्हें घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री कीमतों के % के रूप में व्यक्त किए जाने पर घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती होती है।

कम कीमत पर बिक्री

30. प्राधिकारी ने याचिकाकर्ता के इस दावे का भी परीक्षण किया है कि घरेलू उद्योग प्रोपिलीन ग्लाइकॉल की बिक्री में हुए घाटे के कारण क्षति का सामना कर रहा है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति का निर्धारण करने के लिए कम कीमत पर बिक्री एक महत्वपूर्ण संकेतक है। प्राधिकारी ने विचाराधीन उत्पाद के लिए एक क्षतिरहित कीमत का निर्धारण किया है तथा कम कीमत पर बिक्री की सीमा को ज्ञात करने हेतु उसकी तुलना पहुँच मूल्य के साथ की है। विश्लेषण द्वारा कम कीमत पर बिक्री के एक उच्च स्तर का पता चलता है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हो रही है। इसके अतिरिक्त चूंकि क्षति परीक्षण की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की कीमतों में समग्र रूप से काफी गिरावट प्रदर्शित हुई थी, इसलिए आयातों के कारण घरेलू बाजार की कीमतों पर अत्यधिक ह्रासकारी प्रभाव पड़ रहा था। घरेलू उद्योग की कीमतों पर पड़ रहे ह्रासकारी प्रभाव के कारण कीमत कटौती का मार्जिन महत्वपूर्ण प्रतीत नहीं होता है तथा कुछेक संबद्ध देशों के आयातों में भी नकारात्मक कीमत कटौती प्रदर्शित होती है। तथापि प्राधिकारी नोट करते हैं कि ऐसा घरेलू उद्योग के कीमत अवमूल्यन के कारण हो सकता है। अतः उपलब्ध साक्ष्यों के परीक्षण से पता चलता है कि घरेलू उद्योग की जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं की बिक्री के कारण समग्र रूप से क्षति हुई है। प्राधिकारी ने जांच की अवधि के दौरान कीमत कटौती की सीमा का निर्धारण किया है और इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि घरेलू उद्योग ने जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों से आयातों के कारण कीमत कटौती तथा अत्यधिक कम कीमत पर बिक्री के कारण क्षति का सामना किया है। इसके अतिरिक्त प्राधिकारी ने सभी सहयोगी निर्यातकों के व्यक्तिगत पहुँच मूल्यों को ध्यान में रखते हुए निर्यातक विशिष्ट कम कीमत पर बिक्री की गणना की है। ये पहुँच मूल्य वास्तविक निर्यात कीमतों पर आधारित हैं, इसलिए कम कीमत पर नगों की बिक्री की गणना करते समय बेहतर गुणवत्ता के कारण लगने वाली उच्च कीमतों से संबंधित मुद्दों पर विचार किया जाता है।

| कीमत ह्रास/कीमत कटौती/कम कीमत पर बिक्री | | | |
|---|---------|---------|---------|
| | 2000-01 | 2001-02 | 2002-03 |
| बिक्री कीमत रूपए/इकाई | 100 | 91.4 | 89.2 |
| लागत/इकाई | 100 | 87.9 | 94.2 |
| कीमत कटौती का % | 8-15 | 2-6 | 8-15 |
| कम कीमत पर बिक्री का % | | | 15-25 |

कीमत ह्रास

31. जैसा कि पूर्ववर्ती पैराग्राफ में नोट किया गया है, वर्ष 2000-01 की तुलना में जांच की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों में गिरावट आई है। परीक्षण के आधार पर प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग कीमत ह्रास का सामना कर रहा है। यद्यपि वर्ष 2000-2001 से 2002-2003 तक उत्पादन लागत में 5-8 % की गिरावट आई है, परन्तु बिक्री कीमतों में 11 % से अधिक की गिरावट आई है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि बिक्री मात्रा में संपूर्ण अर्थों में वृद्धि करने के बाद भी घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतें ह्रासकारी बनी रही हैं तथा घरेलू उद्योग को क्षतिरहित कीमत से काफी कम कीमत पर संबद्ध वस्तु की बिक्री करनी पड़ रही है। जांच के आधार पर प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग को कीमत ह्रास के कारण भी क्षति हुई है।

(च) घरेलू उद्योग की स्थिति**प्रारंभिक टिप्पणियाँ**

32. भारत में घरेलू उद्योग पर आयातों के प्रभाव की जांच करने के लिए प्राधिकारी ने उपर्युक्त नियमावली के अनुबंध-II (iv) के अनुसार ऐसे अन्य संकेतकों पर विचार किया है जो उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालते हैं जैसे कि उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री मात्रा, स्टॉक, लाभप्रदता, निवल बिक्री प्राप्ति, पाटन की मात्रा एवं मार्जिन इत्यादि।

क्षमता, उत्पादन तथा क्षमता उपयोग

33. जांच की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग का उत्पादन 82 प्रतिशत से 89 प्रतिशत तक बढ़ गया था। चूंकि जांच की अवधि के दौरान उत्पादन क्षमता में कोई परिवर्तन नहीं हुआ था, इसलिए जांच की अवधि के दौरान क्षमता उपयोग में 7 प्रतिशत का सुधार हुआ था।

| उत्पादन क्षमता एवं उपयोगिता | | | |
|-----------------------------|---------|---------|---------|
| | 2000-01 | 2001-02 | 2002-03 |
| क्षमता | 13250.0 | 13250.0 | 13250.0 |
| उत्पादन | 10986.0 | 10429.0 | 11786.0 |
| क्षमता उपयोग % | 82.91 | 78.71 | 88.95 |
| सूचकांक | 100 | 94.93 | 107.285 |

भंडार सूचियां

| भंडार सूचियों पर वास्तविक एवं संभावित नकारात्मक प्रभाव | | | |
|--|---------|---------|---------|
| | 2000-01 | 2001-02 | 2002-03 |
| भंडार सूची/स्टॉक | **** | **** | **** |
| बिक्री मात्रा मी.टन | **** | **** | **** |
| बिक्री मात्रा के लिए भंडार सूची का % | 18.13 | 3.83 | 2.58 |
| सूचीबद्ध स्टॉक | 100.00 | 24.86 | 16.76 |

34. जांच की अवधि के दौरान स्टॉकों में 83.24 प्रतिशत की गिरावट आई थी। वर्ष 2000-01 के दौरान, बिक्री मात्रा में उनका हिस्सा 18.13 प्रतिशत था जबकि जांच की अवधि में यह बिक्री मात्रा का 2.58 प्रतिशत ही रह गया था।

नकद प्रवाह

35. एक बहु उत्पाद कंपनी होने के कारण प्राधिकारी विचाराधीन उत्पाद के संबंध में होने वाले नकद प्रवाह का सही निर्धारण नहीं कर सके। अतः प्राधिकारी उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर, घरेलू उद्योग के इस दावे के बावजूद कि उन्होंने जांच की अवधि में नकारात्मक नकद प्रवाह का सामना किया है, इस मानदंड के अनुसार क्षति का निर्धारण नहीं कर सके।

घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा एवं बाजार हिस्सा

36. घरेलू बाजार में घरेलू उद्योग की बिक्री में मात्रा के संदर्भ में 17.83 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। तथापि, मूल्य के संदर्भ में, प्रति इकाई प्राप्ति में काफी गिरावट आई है।

37. तथापि, जांच की अवधि में घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में 6 प्रतिशत से अधिक की गिरावट आई है।

38. जांच की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग ने लगातार अपना बाजार हिस्सा गंवाया है। तथापि, पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में, जांच अवधि के दौरान बाजार हिस्से में गिरावट अधिक उल्लेखनीय थी।

| बिक्री में वास्तविक एवं संभावित गिरावट | | | |
|--|---------|---------|---------|
| | 2000-01 | 2001-02 | 2002-03 |
| मी.टन | **** | **** | **** |
| पिछले वर्ष की तुलना में परिवर्तन | | **** | **** |
| % परिवर्तन | | 17.71 | 0.11 |

| | | | |
|----------------------------------|------|-------|-------|
| रूपए बिक्री | **** | **** | **** |
| पिछले वर्ष की तुलना में परिवर्तन | | **** | **** |
| % परिवर्तन | | -8.64 | -2.54 |

| उत्पादन में वास्तविक एवं संभावित गिरावट | | | |
|---|---------|---------|---------|
| | 2000-01 | 2001-02 | 2002-03 |
| किग्रा. (000) | **** | **** | **** |
| % परिवर्तन | | 94.93 | 107.28 |

| घरेलू उद्योग का सूचीबद्ध बाजार हिस्सा | | | |
|---------------------------------------|---------|---------|---------|
| | 2000-01 | 2001-02 | 2002-03 |
| संबद्ध देश | 30.8 | 31.7 | 36.50 |
| गैर संबद्ध देश | 0.8 | 1.2 | 0.43 |
| कुल आयात | 31.6 | 32.4 | 36.93 |
| घरेलू उद्योग | 68.4 | 66.0 | 63.07 |

वृद्धि

39. यद्यपि वर्ष 2000-01 तथा जांच अवधि के बीच घरेलू मांग में 28 प्रतिशत की वृद्धि हुई तथापि उसी अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा में केवल 17 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी। तथापि, कुल मांग में उनके बाजार हिस्से में 68 प्रतिशत से 64 प्रतिशत तक गिरावट आई है। दूसरी ओर कुल मांग में संबद्ध देशों से आयातों की मात्रा में उसी अवधि के दौरान 20 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी। अतः घरेलू उद्योग ने बाजार हिस्से में 6 प्रतिशत से अधिक का हिस्सा गंवाया है जबकि संबद्ध देशों से होने वाले आयातों के बाजार हिस्से में उसी अवधि के दौरान 52 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग की बाजार उपस्थिति में लगातार कमी आई है जबकि जांच अवधि के दौरान घरेलू मांग में 20 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि हुई है।

बिक्री कीमतें

40. वर्ष 2000-01 और जांच अवधि के बीच घरेलू उत्पादक की घरेलू बाजार में उत्पादित एवं बेची जाने वाली संबद्ध वस्तु की औसत निवल बिक्री कीमत में 11% की गिरावट आई।

41. वर्ष 2000-01 और 2001-02 के दौरान बिक्री कीमत में 8.64% और 2001-02 तथा 2002-03 के दौरान 2.57% की कमी हुई।

42. बिक्री कीमत के क्रमविकास को इकाई उत्पादन लागत के क्रमविकास के साथ तुलनात्मक रूप में देखा जाना चाहिए। वर्ष 2000-01 तथा 2001-02 के बीच घरेलू उद्योग की इकाई उत्पादन लागत में **** % की गिरावट आई। तथापि, 2001-02 से 2002-03 के दौरान उसमें **** % की वृद्धि हुई जो मुख्य रूप से निविष्टियों/कच्चे माल की लागत में वृद्धि होने के कारण थी। प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में आई गिरावट इकाई उत्पादन लागत में आई गिरावट से अधिक है। प्राधिकारी आगे नोट करते हैं कि फर्म ने रोजगार में कमी करके लागत में

कमी करने के प्रति दृढ़ कदम उठाए हैं। तथापि, विचाराधीन अवधि के दौरान इकाई उत्पादन लागत में वृद्धि होने के बावजूद पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग पर कीमतों को कम करने का दबाव पड़ा।

रोजगार

43. 2000-01 और जांच अवधि के बीच घरेलू उद्योग के रोजगार के स्तर में 27.1% की गिरावट आई।

इकाई लागतों को घटाने के लिए उत्पादकता को बढ़ाने के प्रयत्नस्वरूप वर्ष 2000-01 तथा उसके बाद स्टाफ में अत्यधिक कमी हुई।

| रोजगार एवं मजदूरियों पर वास्तविक एवं संभावित नकारात्मक प्रभाव | | | |
|---|---------|---------|---------|
| | 2000-01 | 2001-02 | 2002-03 |
| कर्मचारियों की संख्या | 576 | 469 | 420 |
| % परिवर्तन | | 81.42 | 89.55 |
| बिक्री/रोजगार की मात्रा | **** | **** | **** |
| सूचकांक | 100.00 | 144.6 | 161.6 |

| रोजगार | | | |
|-----------------------|-------------|-------------|-----------|
| | जांच अवधि 2 | जांच अवधि 1 | जांच अवधि |
| कर्मचारियों की संख्या | 576 | 469 | 420 |
| % परिवर्तन | | 81.42 | 89.55 |
| सूचकांक | 100.00 | 81.4 | 72.9 |

| मजदूरी | | | |
|--------------|-------------|-------------|-----------|
| | जांच अवधि 2 | जांच अवधि 1 | जांच अवधि |
| लाख रु./वर्ष | **** | **** | **** |
| % परिवर्तन | | 92.03 | 88.49 |
| सूचकांक | 100.00 | 92.0 | 81.4 |

उत्पादकता

45. वर्ष 2000-01 से जांच अवधि के बीच प्रति वर्ष नियुक्त प्रति व्यक्ति उत्पादन के रूप में मापी जाने वाली उत्पादकता में विचाराधीन अवधि के दौरान 46.71% की वृद्धि हुई। उत्पादकता में वृद्धि को घरेलू उद्योग के कर्मचारियों की संख्या में कमी की पृष्ठभूमि में देखा जा सकता है।

| उत्पादकता | | | |
|-----------------|---------|---------|-----------|
| | 2000-01 | 2001-02 | जाँच अवधि |
| कारोबार लाख में | **** | **** | **** |
| कर्मचारी | **** | **** | **** |
| % उत्पादकता | **** | **** | **** |
| सूचकांक | 100.00 | 123.09 | 146.71 |

मजदूरी

46. 2000-01 तथा जाँच अवधि के बीच प्रति कर्मचारी औसत मजदूरी में 18.6% की गिरावट आई। मजदूरी में गिरावट को स्टाफ को निलम्बित करने के कारण घरेलू उद्योग के कर्मचारियों की संख्या में कमी के संदर्भ में समझा जा सकता है। पिछले कुछ वर्षों के दौरान वह कोई अनुदान वृद्धि अथवा पदोन्नति देने में असमर्थ रहा है। संवैधानिक बोनस के अतिरिक्त सभी वृद्धियों में अत्यधिक कटौती की गई है।

घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक

47. प्राधिकारी नोट करते हैं कि विचाराधीन अवधि के दौरान संबद्ध देश से प्रोपेलीन ग्लाइकोल की आयात कीमतें 41456 रु./मी.टन से कम होकर 38705 रु./मी. टन हो गई हैं अर्थात् उनमें 6.5% से अधिक की गिरावट आई है। वस्तुतः इस तथ्य के बावजूद कि विचाराधीन अवधि के दौरान प्रोपेलीन ग्लाइकोल की अंतर्राष्ट्रीय कीमत में अत्यधिक वृद्धि हुई थी जो कि क्रूड तेल कीमतों में वृद्धि के कारण आवश्यक थी, 2000-01 से 2001-02 तक कीमतों में 6.6% तक अत्यधिक गिरावट आई है और 2001-02 से जाँच अवधि के बीच वे स्थिर बनी रही हैं। इसके आगे यह नोट किया गया है कि पाटित आयातों की कम कीमतों और संबद्ध वस्तु की अत्यधिक मात्रा के कारण बाजार कीमतों में कमी हुई थी। इस सूचना के आधार पर प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि पाटित आयात कीमतों से घरेलू कीमतों पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा है।

लाभप्रदता

48. विचाराधीन अवधि में निवल बिक्रियों पर कर के पूर्व लाभ/हानि के रूप में घरेलू उद्योग की असंबद्ध ग्राहकों को बिक्रियों की लाभप्रदता -2.5% - -3.5% से गिर कर -8% से -10% हो गई। पूर्व वर्ष की तुलना में जाँच अवधि में वर्ष वार आधार पर लाभप्रदता में 9% से 11% तक गिरावट आई।

निवेश पर आय तथा पूँजी उगाहने की क्षमता

49. प्राधिकारी नोट करते हैं कि चूंकि कंपनी को घाटा हो रहा है अतः निवेश पर आय 2000-01 के दौरान -4 से 6% और पिछले वर्ष + 1- 2% की तुलना में 10-13% की सीमा तक ऋणात्मक है। अतः प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग अपने निवेश पर कोई आय प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

50. प्रोपेलीन ग्लाइकोल के उत्पादन के लिए घरेलू उद्योग द्वारा लगाई जाने वाली पूंजी में कमी हुई है ।

51. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पिछले वर्ष कुछ लाभ अर्जित करने के बाद कंपनी को जाँच अवधि के दौरान घाटा हुआ है । यह घाटा इस तथ्य के बावजूद हुआ है कि कंपनी ने अपनी उत्पादन लागत को कम करने के दृढ़ प्रयास किए हैं । कंपनी का कहना है कि वे एक पावर परियोजना को कार्यान्वित करने पर विचार कर रहे हैं जिससे उत्पादन लागत को और कम करने में सहायता मिलेगी । पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से कंपनी अधिक आय प्राप्त करने और इसके परिणामस्वरूप पूंजी उगाहने को बेहतर बनाने में भी समर्थ होगी ।

पाटन मार्जिन की मात्रा

52. जैसा कि पिछले पैराग्राफों में परिकलित किया गया है, संबद्ध देशों में से प्रत्येक से पाटन मार्जिन की मात्रा अत्यधिक है ।

खोई हुई संविदाओं के साक्ष्य

53. प्राधिकारी को संविदाओं को गँवा देने के कारण हुई क्षति के संबंध में कोई प्रत्यक्ष साक्ष्य नहीं मिला । अतः प्राधिकारी इस मानदंड के कारण घरेलू उद्योग को क्षति के संबंध में कोई निष्कर्ष नहीं निकाल सके ।

क्षति संबंधी निष्कर्ष

54. पूर्ववर्ती स्थितियों से प्राधिकारी निष्कर्ष निकालते हैं कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयात में सापेक्ष रूप से, भारत में प्रोपेलीन ग्लाइकोल के कुल आयातों की तुलना में और भारत में प्रोपेलीन ग्लाइकोल की माँग की तुलना में तथा घरेलू उत्पादन की तुलना में भी अत्यधिक वृद्धि हुई है । यह भी निर्धारित किया गया है कि संबद्ध देशों से आयातों के कारण घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में कटौती हो रही है । चूँकि संबद्ध वस्तु की पहुँच कीमत घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत अथवा उचित बिक्री कीमत से कम भी है, अतः याचिकाकर्ता को कीमत कटौती के कारण घाटा हो रहा है । इसके अतिरिक्त याचिकाकर्ता को कीमत ह्रास के कारण घाटा उठाना पड़ रहा है क्योंकि संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु की पहुँच कीमत से घरेलू उद्योग पर बिक्री कीमत को कम करने का दबाव पड़ा है । विचाराधीन अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में गिरावट आई है । संबद्ध वस्तु की बिक्रियों के कारण घरेलू उद्योग को घाटा उठाना पड़ा है । वस्तुतः उन्हें जाँच अवधि के दौरान घाटा हुआ है । यद्यपि, घरेलू उद्योग के उत्पादन/क्षमता उपयोग में कोई गिरावट नहीं आई है और उनके माल सूची बिक्री कारोबार अनुपात में भी विचाराधीन अवधि के दौरान कोई गिरावट नहीं आई है तथापि, कुल माँग की तुलना में और संबद्ध देशों द्वारा किए जाने वाले कुल आयातों की तुलना में भी, घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में कमी आई है । यद्यपि, विचाराधीन अवधि के दौरान बिक्री मात्रा में वृद्धि हुई है तथापि पूरी विचाराधीन अवधि के दौरान उनकी बिक्री कीमतों में गिरावट आई है और बिक्री कीमत में आई गिरावट संबद्ध वस्तु के उत्पादन की लागतों में आई गिरावट से अधिक है । यह भी निर्धारित किया गया है कि विचाराधीन अवधि के दौरान उनकी नियुक्तियों और मजदूरी में अत्यधिक गिरावट आई है, तथापि पूर्वोत्लिखित कारणों से उनकी उत्पादकता में काफी सुधार होने के बावजूद संबद्ध वस्तु की बिक्रियों के कारण उन्हें लगातार घाटा हो रहा है । पूर्ववर्ती स्थिति के

आधार पर प्राधिकारी मानते हैं कि घरेलू उद्योग को मात्रात्मक तथा कीमत क्षति हुई है। समग्र रूप से, संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

ज. कारणात्मक संबंध

(क) भूमिका

55. घरेलू उद्योग द्वारा उठाई गई क्षति के कारण पर किसी निष्कर्ष तक पहुंचने के लिए तथा पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 3.5 तथा यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अंतर्गत नियम 11 के अंतर्गत अनुबंध II के पैरा (v) के अनुसार प्राधिकारी ने सभी ज्ञात कारकों के प्रभाव तथा उद्योग पर उनके परिणामों की जांच की थी। पाटित आयातों से इतर अन्य ज्ञात कारकों जिनसे उसी समय घरेलू उद्योग को क्षति पहुंच सकती थी, की भी यह सुनिश्चित करने के लिए जांच की गई कि इन अन्य कारकों से हुई संभावित क्षति के लिए पाटित आयात जिम्मेदार तो नहीं थे।

(ख) पाटित आयातों के प्रभाव

56. वर्ष 2000-01 तथा जांच अवधि के बीच, संबद्ध देशों से पाटित आयातों में मात्रा के रूप में 52% तक तथा बाजार हिस्से के रूप में 20% तक (वर्ष 2000-01 में 30.8% से जांच अवधि में 37.2%) पर्याप्त रूप से वृद्धि हुई। जहां तक निर्यात कीमतों का सम्बन्ध है उनमें समूची विचाराधीन अवधि के दौरान काफी गिरावट आयी तथा उनसे जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की कीमतों में 1-3% के औसत से कटौती हुई। इसके अलावा, कटौती किए गए आंकड़ों से पाटित आयातों के सम्पूर्ण प्रभाव का प्रदर्शन नहीं हुआ था क्योंकि घरेलू उद्योग की कीमतों का ह्रास हुआ। यह सब घरेलू उद्योग की स्थिति में गिरावट के साथ कीमत में कमी, बाजार हिस्से में कमी तथा लाभप्रदता में गिरावट के रूप में हुआ।

57. समूची विचाराधीन अवधि के दौरान पाटित आयातों की कीमतें घरेलू उद्योग की कीमतों से कम रहीं थीं तथा इस पर एक दबाव बनाया जिससे उत्पादन की लागत में वृद्धि होने के बावजूद घरेलू उद्योग को कीमतें घटाने पर बाध्य होना पड़ा। इसलिए यह माना जाता है कि पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई।

(ग) अन्य कारकों के प्रभाव

(क) अन्य घरेलू उत्पादकों का निष्पादन

58. विचाराधीन अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु का याचिकाकर्ता के सिवाय और कोई दूसरा घरेलू उत्पादक नहीं था। इसलिए संबद्ध वस्तु का उत्पादन करने वाले अन्य घरेलू उत्पादकों के निष्पादन का घरेलू उद्योग के निष्पादन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ सका।

(ख) स्वआरोपित क्षति, बड़े पैमाने पर किफायतें तथा एस ई पी एल की लागत क्षमता

निर्यातक द्वारा यह तर्क दिया गया है कि लागत ढांचा, क्रयनीति, संविदा नियम और

याचिकाकर्ता की अपने प्रोपीलीन आक्साइड के उत्पादन को विशेषकर पालीओल व्यवसाय में उपयोग करने की नीति के कारण प्रोपीलीन ग्लाइकोल परिसंपत्तियों का लदान प्रतिबंधित हुआ है जिसके कारण मुख्य रूप से कथित क्षति, यदि कोई हो, हुई है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि उन्होंने संबद्ध वस्तु की उत्पादन लागत एवं क्षति रहित कीमत का निर्धारण प्रोपीलीन व्यवसाय से संबंधित किसी ऊपरी व्यय पर विचार किए बिना घरेलू उद्योग के आंकड़ों का सत्यापन करके संबद्ध वस्तु की वास्तविक उत्पादन लागत को ध्यान में रखकर किया है।

60. एस ई पी एल द्वारा यह तर्क दिया गया है कि घरेलू उद्योग की तुलना में कच्चे माल के उत्पादन की उनकी क्षमता से बड़े पैमाने पर बचत होगी। आगे यह तर्क दिया गया है कि घरेलू उद्योग तथा एस ई पी एल द्वारा अपनाई गई पी ओ के विनिर्माण की प्रक्रियाएं, जो कि प्रोपीलीन ग्लाइकोल के उत्पादन के लिए एक प्रमुख निविष्टि है, बिल्कुल अलग हैं। यह कहा गया है कि एस ई पी एल, एस एम पी ओ प्रक्रिया का उपयोग करती है जो कि शैल के स्वामित्व वाली प्रक्रिया है। दूसरी ओर घरेलू उद्योग द्वारा अंगीकृत प्रक्रिया क्लोरोहाइड्रिन प्रक्रिया है। यह कहा गया है कि एस ई पी एल द्वारा अपनाई गई एस एम पी ओ प्रक्रिया के याचिकाकर्ता द्वारा अपनाई गई क्लोरोहाइड्रिन प्रक्रिया से अधिक फायदे हैं क्योंकि पहले वाली प्रक्रिया से प्रमुख कच्चे माल अर्थात् प्रोपीलीन का अंतिम उत्पादन में अधिक दक्षता से परिवर्तन होता है तथा अवशिष्ट पदार्थ कम मात्रा में उत्पन्न होते हैं। इसके अलावा, एस ई पी एल द्वारा यह कहा गया है कि उनके मामले में कारिडोर पाइपलाइनों तथा बेहतर वितरण प्रणालियों के कारण संभरण लागतें कमतर हैं।

61. प्राधिकारी एस ई पी एल द्वारा दिए गए इस तर्क के संबंध में नोट करते हैं कि पैमाने संबंधी किसी किफायत से लागत में कमी होगी तथा बेहतर दक्षता प्राप्त होगी तथा यह संबंधित निर्यातक के उत्पादन की लागत में पर्याप्त रूप से परिलक्षित होगी। इस संबंध में, भारतीय पाटनरोधी नियमावली- (अनुबंध 1 के पैरा 1) के संगत प्रावधान को नीचे पुनः उद्धृत किया गया है :

1. सामान्य मूल्य के निर्धारण के संदर्भ में लागत के तत्व सामान्य तौर पर जांच के दौरान निर्यातक अथवा उत्पादक द्वारा रखे गए अभिलेखों के आधार पर निर्धारित किए जाएंगे, बशर्ते कि ऐसे अभिलेख निर्यातक देश के सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों के अनुसार हों, तथा ऐसे अभिलेख विचाराधीन वस्तु के उत्पादन तथा बिक्री से सम्बद्ध लागत को उचित ढंग से दर्शाते हों।"

62. उपर्युक्त नियम जो कि डब्ल्यू टी ओ के पाटनरोधी करार के अनुक्रम में हैं, में जांचकर्ता प्राधिकारी से जांचाधीन निर्यातक या उत्पादक द्वारा रखे गए रिकार्डों के आधार पर सामान्य तौर पर सामान्य मूल्य के निर्धारण की अपेक्षा की गई है जब तक कि यह सिद्ध हो सकता हो कि निर्यातक द्वारा अपनाई जा रही लेखा प्रणाली अनेक जी ए पी पी के अनुसार है और उससे विचाराधीन वस्तु के उत्पादन तथा बिक्री से संबद्ध लागत तर्कसंगत ढंग से प्रदर्शित होती है। इसलिए, विनिर्माण की प्रक्रियाओं में अंतर, खासकर अंतिम कच्ची सामग्री में, जहाँ तक घरेलू उद्योग में क्षति के निर्धारण का सम्बन्ध है, का कोई प्रभाव प्रदर्शित नहीं हुआ है।

63. इसके अतिरिक्त, एस ईपी एल ने यह स्वतः उल्लेख किया है कि वे स्वामित्व वाली प्रक्रिया के जरिए पी ओ का उत्पादन करते हैं। प्राधिकारी नोट करते हैं कि विनिर्माण की स्वामित्व वाली प्रक्रिया के आधार पर दावा की जा रही दक्षता का, विश्व के अन्य उत्पादकों जिनकी एक विशेष प्रकार की प्रक्रिया तक पहुँच नहीं है, पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। किसी मामले में, जैसा कि ऊपर विचार किया गया है, किसी उत्पादक की लागत तथा उत्पादन संबंधी दक्षता सामान्य मूल्य के निर्धारण के उद्देश्य से उत्पादन की उनकी लागत में ठीक तरह से प्रदर्शित होती है।

(ग) उत्पादन तथा क्षमता

64. जहाँ तक घरेलू उद्योग की घरेलू मांग तथा उनके अपने उत्पादन के मध्य के अंतराल को पाटने से संबंधित अक्षमता का संबंध है, यह देखा जा सकता है कि पाटनरोधी शुल्क के लगाने से पाटन रहित कीमतों पर अन्य गैर पाटित स्रोतों अथवा यहाँ तक कि संबद्ध देशों से पूर्ति पर कोई प्रतिबंध नहीं लगता है। इसलिए प्राधिकारी निर्यातक के तर्कों में कोई सार नहीं पाते हैं। प्राधिकारी नोट करते हैं कि उत्पादन तथा क्षमता उपयोग में वृद्धि की आवश्यकता निर्धारित लागतों के प्रभाव को कम करने के साथ-साथ यह सुनिश्चित करने के लिए हो सकती है कि वे अपने वर्तमान ग्राहकों को खोकर बाजार से बाहर न हो जाएं।

(घ) मांग में संकुचन तथा खपत के तरीके में परिवर्तन

65. प्राधिकारी नोट करते हैं कि विचाराधीन अवधि के दौरान कुल मांग में कोई संकुचन नहीं हुआ है। इसके विपरीत कुल मांग वर्ष 2000-01 से 2002-03 में 28 प्रतिशत तक बढ़ गयी है। इसलिए प्राधिकारी का भी निष्कर्ष है कि खपत के तरीके में कोई स्पष्ट परिवर्तन नहीं हुआ है।

(ङ.) पाटित कीमतों पर नहीं बेचे गए आयातों की मात्रा तथा कीमतें

66. उपलब्ध सूचना के अनुसार, संबद्ध देशों से इतर देशों के मूल से संबंधित उत्पाद की कुल आयातित मात्रा में 50 प्रतिशत की कमी आयी है तथा उनके बाजार हिस्से 0.8 से घटकर 0.4 प्रतिशत हो गए हैं। पाटित आयातों की मात्रा विचाराधीन अवधि के दौरान 30.8 प्रतिशत से बढ़कर 37.2 प्रतिशत हो गई है जबकि गैर पाटित आयातों का हिस्सा इसी अवधि में 0.8 प्रतिशत से घटकर 0.4 प्रतिशत हो गया है। आगे यह नोट किया जाता है कि गैर-संबद्ध देशों से आयात निरपेक्ष रूप से भी बिल्कुल नगण्य हैं इसलिए उनका घरेलू उद्योग पर कोई प्रभाव नहीं माना गया है।

(च) विदेशी तथा घरेलू उत्पादकों का व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहार तथा उनके बीच प्रतिस्पर्धा

67. प्राधिकारी नोट करते हैं कि यहाँ संबद्ध वस्तु का एकमात्र बाजार है जहाँ संबद्ध देशों से पाटित आयात, घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तुओं से सीधे प्रतिस्पर्धा करते हैं। संबद्ध देशों से विनिमयवार आयातों की जांच के आधार पर तथा सिगापुर से सहयोगी निर्यातक द्वारा मुहैया कराए गए आंकड़ों से यह पता चलता है कि कीमत से पूर्तिकर्ता का चुनाव निर्धारित होता है क्योंकि पाटित संबद्ध वस्तु देशी उत्पादक की वस्तु के समान उत्पाद है। प्राधिकारी आगे नोट करते हैं कि आयातित उत्पाद की बिक्री घरेलू तौर पर उत्पादित संबद्ध वस्तु के समान वाणिज्यिक ग्रेडों तथा विशिष्टीकरण को प्राप्त करने के लिए की जाती है। आगे यह नोट किया गया है कि आयातित संबद्ध वस्तु तथा घरेलू तौर पर उत्पादित वस्तु, समान वस्तुएं हैं तथा समान अनुप्रयोगों/उद्देश्यों के लिए उपयोग की जाती हैं।

(छ) घरेलू उद्योग की प्रौद्योगिकी, निर्यात निष्पादन तथा उत्पादकता में सुधार

68. प्राधिकारी नोट करते हैं कि मनाली पेट्रोकेमिकल्स लिमिटेड (एम पी एल) क्लोरोहाइड्रीन रूट प्रौद्योगिकी पर आधारित एक प्रोपीलीन आक्साइड संयंत्र का प्रचालन कर रहा है। प्राधिकारी का यह कहना है कि यह आदर्श रूप से मध्यम स्तर के संयंत्रों के लिए है जहाँ क्लोरीन तथा प्रोपीलीन दोनों उपलब्ध रहती है तथा इन्हें समुद्री किनारे के समीप इसलिए स्थापित किया जाता है ताकि कंपनी इस प्रक्रिया में उत्पादित अत्यधिक दूषित पानी को पम्प कर सके। याचिकाकर्ता ने यह बताया है कि मै0 एम पी एल द्वारा प्रोपीलीन ग्लाइकोल के लिए अपनाई गयी प्रौद्योगिकी बिल्कुल आधुनिक है तथा इसकी किसी भी बहुराष्ट्रीय संयंत्र से तुलना की जा सकती है। प्राधिकारी आगे यह नोट करते हैं कि कंपनी को डी एन बी द्वारा वर्ष 1996 से आई एस ओ 9001 प्रमाण-पत्र दिया गया है। जिसकी पुनर्प्रमाणीकरण लेखा परीक्षा 1999 तथा 2002 में पूरी की गयी है। यह भी नोट किया गया है कि फर्म को आई एस ओ 14000 के अनुपालन के लिए प्रमाणित किया गया है जो कि पर्यावरण संबंधी वचनबद्धताओं, दूषित पानी के पुनः उपयोग से संबंधित है तथा स्रोतों के उपयोग को सीमित करता है। याचिकाकर्ता के रिकार्डों की जांच के आधार पर प्राधिकारी मानते हैं कि प्रौद्योगिकी का विकास घरेलू उद्योग को हुई क्षति के संगत एक कारक नहीं है।

69. घरेलू उद्योग के निर्यात कार्य-निष्पादन के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि यद्यपि विचाराधीन अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के निर्यातों में सुधार हुआ है लेकिन तब भी यह घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्रियों का बहुत ही नगण्य हिस्सा बनता है। इसलिए प्राधिकारी मानते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा उठायी गयी क्षति घरेलू उद्योग के निर्यात कार्य-निष्पादन के परिणामस्वरूप नहीं हुई है।
70. जहां तक उत्पादकता में सुधार का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि विचाराधीन अवधि के दौरान प्रतिवर्ष लगाए गए प्रति व्यक्ति उत्पादन में 46.7 प्रतिशत की वृद्धि हुई। आगे यह नोट किया जाता है कि उत्पादकता में बढ़ोतरी को घरेलू उद्योग के कर्मचारियों की संख्या में कमी की पृष्ठभूमि और घरेलू उद्योग द्वारा क्रियान्वित लागत में कमी करने वाले विभिन्न उपायों के परिप्रेक्ष्य में भी देखा जा सकता है। जांच के आधार पर प्राधिकारी का मानना है कि फर्म ने बेहतर उत्पादकता के लिए कदम उठाए हैं और उत्पादकता स्वयं में घरेलू उद्योग की क्षति का कारण नहीं है।

(ज) कारणात्मक संबंधी निष्कर्ष

71. उपर्युक्त विश्लेषण जिसमें घरेलू उद्योग की स्थिति पर सभी ज्ञात कारकों के प्रभाव को पाटित आयातों के क्षतिकारी प्रभाव से समुचित रूप से अलग तथा विभक्त किया गया है, के मद्देनजर यह निष्कर्ष निकाला गया है कि ऐसे अन्य कारकों से यह तथ्य प्रतिवर्तित नहीं हुआ कि पायी गयी वास्तविक क्षति के लिए पाटित आयातों को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है।
72. अतः यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि संबद्ध देशों के मूल के पाटित आयातों से पाटनरोधी नियमावली के नियम 11 और पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 3.5 के अर्थ के भीतर घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

(झ) भारतीय उद्योग का हित:

73. पाटनरोधी शुल्क लगाने का उद्देश्य सामान्य तौर पर ऐसे पाटन को समाप्त करना है जिससे भारतीय उद्योग को क्षति हो रही है तथा भारतीय बाजार में ऐसी खुली एवं उचित प्रतिस्पर्धा की पुनः स्थिति लाना है जो कि देश के सामान्य हित में है ।
74. प्राधिकारी यह मानते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लगाने से संबद्ध वस्तुओं के उपयोग से विनिर्मित उत्पादों के कीमत स्तर प्रभावित हो सकते हैं और परिणामस्वरूप इन उत्पादों की तुलनात्मक प्रतिस्पर्धात्मकता पर प्रभाव पड़ सकता है । तथापि पाटनरोधी उपायों से भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा कम नहीं होगी । इसके विपरीत, पाटनरोधी उपायों को लागू करने से पाटन द्वारा प्राप्त हुए अनुचित लाभ समाप्त होंगे, भारतीय उद्योग का ह्रास रूकेगा और संबद्ध वस्तु के उपभोक्ताओं के लिए व्यापक विकल्प उपलब्ध रखने में मदद मिलेगी ।
75. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि पाटनरोधी उपायों को लागू करने से संबद्ध देशों से आयात किसी भी प्रकार प्रतिबंधित नहीं होंगे और इस प्रकार उपभोक्ताओं के लिए उत्पाद की उपलब्धता पर कोई असर नहीं पड़ेगा । उपभोक्ता तब भी दो अथवा उससे अधिक आपूर्ति स्रोतों को बनाए रख सकते हैं ।

(ञ) निष्कर्ष :

76. प्राधिकारी पूर्वोक्त पर विचार करने के पश्चात इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि:
- क. संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं का भारत को निर्यात इनके सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किया गया है ।
- ख. घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है ।
- ग. यह क्षति संचयी रूप से संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण हुई है ।

77. प्राधिकारी घरेलू उद्योग को हुई क्षति को दूर करने के लिए संबद्ध देशों से प्रोपाइलीन ग्लाइकोल के सभी आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाना आवश्यक समझते हैं। प्राधिकारी द्वारा निर्धारित पाटन मार्जिन उपर्युक्त पैराग्राफों में दर्शाया गया है। प्राधिकारी पाटन मार्जिन के बराबर या उससे कम पाटनरोधी शुल्क की राशि की सिफारिश करने का प्रस्ताव करते हैं जिसे यदि लगाया जाता है तो उससे घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त हो जाएगी। क्षति का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ आयातों के पहुँच मूल्य की तुलना जांच अवधि के लिए निर्धारित याचिकाकर्ता कंपनी की क्षति रहित कीमत के साथ करने का प्रस्ताव है।
78. तदनुसार, प्राधिकारी सिफारिश करते हैं कि संबद्ध देशों के मूल की अथवा वहां से निर्यातित सीमाशुल्क शीर्ष 29053200 के अंतर्गत आने वाली प्रोपाइलीन ग्लाइकोल के सभी आयातों पर केन्द्र सरकार द्वारा इस संबंध में जारी की जाने वाली अधिसूचना की तारीख से निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाया जाए। पाटनरोधी शुल्क निम्नलिखित तालिका के कॉलम 3 में उल्लिखित राशि तथा नीचे उल्लिखित देशों के मूल की अथवा वहां से निर्यातित सीमाशुल्क टैरिफ के अध्याय 29 के अंतर्गत आने वाली संबद्ध वस्तुओं के सभी आयातों पर इस संबंध में केन्द्र सरकार द्वारा जारी की जाने वाली अधिसूचना की तारीख से लागू प्रति मी.टन आयातों के पहुँच मूल्य के बीच का अंतर होगा:-

| क्र. सं. | उप शीर्ष या टैरिफ मद | माल का विवरण | विनिर्देशन | उद्गम का देश | निर्यात का देश | उत्पादक | निर्यातक | राशि | माप की इकाई | मुद्रा |
|----------|----------------------|---------------------|----------------|------------------------------|------------------------------|-------------------------------------|-------------------------|---------|-------------|-------------|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 |
| 1 | 29053200 | प्रोपाइलीन ग्लाइकोल | कोई विनिर्देशन | कोई | ई यू यू एस ए और कोरिया आर पी | कोई | कोई | 1221.38 | मी.टन | अमरीकी डालर |
| 2 | 29053200 | प्रोपाइलीन ग्लाइकोल | कोई विनिर्देशन | ई यू यू एस ए और कोरिया आर पी | कोई | कोई | कोई | 1221.38 | मी.टन | अमरीकी डालर |
| 3 | 29053200 | प्रोपाइलीन ग्लाइकोल | कोई विनिर्देशन | सिंगापुर | सिंगापुर | मै0 एस ई पी एल सिंगापुर | मै0 एस ई पी एल सिंगापुर | 991.32 | मी.टन | अमरीकी डालर |
| 4 | 29053200 | प्रोपाइलीन ग्लाइकोल | कोई विनिर्देशन | सिंगापुर | सिंगापुर | मै0 एस ई पी एल के अलावा कोई उत्पादक | कोई | 1019.13 | मी.टन | अमरीकी डालर |
| 5 | 29053200 | प्रोपाइलीन ग्लाइकोल | कोई विनिर्देशन | सिंगापुर | सिंगापुर के अलावा कोई देश | कोई | कोई | 1019.13 | मी.टन | अमरीकी डालर |

79. इस उद्देश्य के लिए आयातों का पहुँच मूल्य सीमाशुल्क अधिनियम, 1962 के अधीन सीमाशुल्क विभाग द्वारा यथा निर्धारित आकलन योग्य मूल्य होगा और उसमें सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम,

- 1975.32 की धारा 3, 3 क, 8 ख, 9 तथा 9 क के तहत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर सभी प्रकार के सीमा शुल्क शामिल होंगे ।
80. इस आदेश के विरुद्ध कोई अपील उपर्युक्त अधिनियम के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पादशुल्क एवं स्वर्ण (नियंत्रण) अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष की जाएगी ।
81. प्राधिकारी इस अधिनियम के संगत उपबंधों और इस संबंध में समय-समय पर जारी की गई सार्वजनिक सूचनाओं के अनुसार निश्चयात्मक उपायों में की गई सिफारिश के अनुसार उन्हें जारी रखने, संशोधित करने अथवा समाप्त करने की जरूरत की समय-समय पर समीक्षा कर सकते हैं । प्राधिकारी द्वारा ऐसी किसी समीक्षा के लिए किसी अनुरोध को उस स्थिति में स्वीकार नहीं किया जाएगा यदि उसे इस प्रयोजनार्थ निर्धारित समय-सीमा के भीतर किसी हितबद्ध पक्षकार द्वारा दायर न किया गया हो ।

अभिजित सेनगुप्त, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 20th August, 2004

FINAL FINDINGS

Subject :—Anti-dumping investigation concerning imports of Propylene Glycol originating in or exported from the European Union, Singapore, Korea RP and USA.

No. 14/8/2003-DGAD.— Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, thereof;

A. PROCEDURE:

1. The procedure described below has been followed:-

(i) The Designated Authority (hereinafter referred to as Authority), under the above Rules, received a written petition from M/s. Manali Petrochemicals Ltd, Chennai, on behalf of the domestic industry, alleging dumping of Propylene Glycol originating in or exported from European Union, Singapore, Korea RP and USA (hereinafter referred to as subject countries);

(ii) The Authority notified the Embassies/High Commissions of subject countries in India about the receipt of fully documented petition made by the petitioner before proceeding to initiate the investigation in accordance with sub-rule (5) of Rule 5 supra;

(iii) The Authority issued a Public Notice dated 22nd August 2003 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating anti dumping proceedings concerning imports of Propylene Glycol from subject countries.

(iv) The Authority forwarded copy of the said public notice to the known exporters, importers, industry associations and to the complainant and gave them an opportunity to make their views known in writing.

(v) According to sub-rule (3) of Rule 6 supra, the Authority provided a copy of the petition to all the known exporters and Embassies/High Commissions of subject countries in India.

(vi) The Authority sent questionnaires, to elicit relevant information, to the following known exporters from European Union, Singapore, Korea RP and USA .

1. Lyondell Chemical Company, USA
2. Shell Eastern Petroleum (Pte.) Ltd, Singapore
3. The Dow Chemical Company, USA
4. S.K.Oxichemical Co Ltd, South Korea
5. M/s Repsol De Quimica., Spain

(vii) M/s Shell Eastern Petroleum (PTE) Ltd (SEPL), Singapore has responded to the exporters questionnaire. Some of the exporters as well as Importers asked for an extension of time to respond to the questionnaire and the Authority after considering the request from the exporters and importers extended the time period to reply to the questionnaire by two weeks. M/s Repsol, Spain and M/s Dow Chemical , USA has responded to the application filed by the domestic industry but has not responded to the exporters questionnaire and have not submitted any information in the form and manner as required in the exporters questionnaire. M/s Repsol has submitted two appendices in their response but no information with regard to their normal value and export price to India has been submitted by them as required in the exporters' questionnaire. In view of their non cooperation, the Authority has treated both the exporters as non cooperative and worked out dumping margin as per the best information available. However the arguments presented by these exporters including the delegation of European Union have been analysed to the extent these have been found relevant in this subject investigations. Further, none of the importers have also submitted any response to the importers questionnaire.

(viii) The Embassies/High Commissions of subject countries in New Delhi were also informed about the initiation of investigation and

requested to advise the exporters/producers from their countries to respond to the questionnaire within the prescribed time;

(ix) The questionnaire was sent to the following known users/importers of subject goods: -

- Lupin Ltd Aurangabad 431 210
- Anand Enterprise Mumbai
- Refnol Resins & Chemicals Ltd Ahmedabad 382 330
- Mundra Enterprise, Bangalore 560 053
- C J Shah & Co Mumbai 400 021
- Pepsi Foods Ltd, Punjab
- Keva Flavours Ltd Mumbai - 400 080.
- ICPA Health Products Ltd Gujarat
- S H Kelkar & Co Ltd Mumbai 400 080
- Ambuja Plastics P Ltd Delhi 110 041
- Amtech Polymers Haryana
- Janardhana Chem Pvt Ltd Mumbai
- Morex Adhesives Pvt Ltd Mumbai
- Morex Petrochem Pvt Ltd Mumbai
- Network Polymers Pvt Ltd Maharashtra
- Babul Products Ltd Gujarat North
- Gopal Enterprises Mumbai
- K Uttamlal & Co Mumbai 400 009

- Pfizer Ltd Mumbai 400 102
- Mechemco Industries Mumbai 400 013
- Jewel Polymers Pvt Ltd Palghat 401 404
- Satyen Polymers Silvassa
- Dujodwala Paper Chemicals Ltd Maharashtra
- Chem Trade Mumbai 400 003
- Asian Paints India Ltd Mumbai 400 078

(x) The Authority kept available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file maintained by the Authority and kept open for inspection by the interested parties;

(xi) **** in this notification represents information furnished by the interested parties on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules;

(xii) The investigation of dumping and injury covered the period from 1st April 2002 to 31st March 2003 (Also called the period of investigation or POI). The examination of trends in the context of injury analysis covered the period from 1st April 2000 to the end of period of investigation (also called period under consideration) as these periods were considered sufficient for the purpose of analysis of trends of injury.

(xiii) The Authority provided an opportunity to all interested parties to present their views orally on 25th May 2004. All parties presenting views orally were requested to file written submissions, of the views expressed orally. Domestic verification as well as exporters verification of the data submitted by them were undertaken by the Authority. The Authority sought and verified all the information it deemed necessary for the purpose of Final Findings with regards to determination of dumping and resulting injury. The Authority conducted on the spot investigation of the domestic industry to the extent considered necessary. The Authority also carried out on spot verification of the data submitted by only cooperating exporter M/s SEPL, Singapore and verified the data submitted by them. In accordance with Rule 16 of The Rule supra, the essential facts/ basis considered for these findings were disclosed to known interested parties on 26th July 2004 and comments received on

the same are duly considered in Final Findings. Confidential copies of the disclosure statement were issued to the domestic industry indicating the Non-injurious price as arrived by the Authority and to the cooperating exporter indicating the normal value and exports price including various adjustments.

(xiv) The cost of the production of the domestic industry was also analysed to work out the optimum cost of the production and the cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles based on the information furnished by the petitioner so as to ascertain if anti Dumping duty lower than dumping margin would be sufficient to remove injury to the domestic Industry.

(xv) Copies of initiation notice were also sent to FICCI, CII, ASSOCHAM etc., for wider circulation.

B. Product under Consideration.

2. The product under consideration in the present case is Propylene Glycol – all grades (also referred to as the subject goods). The propylene glycol is manufactured by the reaction of the propylene oxide with water at high temperature & pressure. The Propylene Glycol is used for industrial applications like manufacture of polyester resin, industrial anti-freezing applications and in pharmaceutical industries. This product is classified under Customs Tariffs Code 29053200.

C. Like Article.

3. The petitioner has claimed that goods produced by it are like articles to the goods originating in or exported from subject countries. There is no significant difference in the subject goods produced by the petitioner and those exported from subject countries. Petitioner claims that the two are technically and commercially substitutable. Rule 2(d) of the Anti-dumping Rule specifies that like articles mean an article, which is identical and alike in all respects to the product under investigation or in the absence of such an article, another article having characteristics closely resembling those of the articles under examination. In order to establish that subject goods produced by the domestic industry is a Like Article to that exported from subject countries, characteristics such as technical specifications, manufacturing process, functions and uses and tariff classification have been considered by the Authority. It has been argued by some exporters that propylene glycol exported by M/s REPSOL (Spain) is a special grade subject goods used only by the pharmaceutical, food and cosmetic industries. It has also been argued that domestic industry produces subject goods only for the industrial

purposes. The submissions made by M/s Repsol/Delegation of EU are based on the assumption that grades referred to above (i.e pharmaceutical, food and cosmetic) are not manufactured by the domestic industry, which has been found to be factually incorrect by the Authority. The Authority notes that the domestic industry produces and sells substantial quantities of all the grades of the subject goods including the pharmaceutical and food grade. Further, It is noted from the onsite inspection of the M/s SEPL that there is no difference in the costs for making the subject goods pertaining to the industrial or Pharmaceuticals grade except for some minor difference which could be on account of handling of the subject goods and cannot be attributed to variations in grades. On basis of the detailed investigation, the Authority, therefore, concludes that propylene glycol produced by domestic industry has characteristics, which are similar to those imported from subject countries and to those sold in the market of exporting countries. In view of the above the Authority holds that propylene glycol produced by the domestic industry and those being imported from and sold in the subject countries are like articles within the meaning of the rules.

D. Domestic Industry

4. The petition has been filed by M/s Manali Petrochemicals Limited, Chennai. The Authority notes that the petitioner is the sole producer of the subject goods in India and hence has standing to file the petition in terms of Rules 5(3) a of the Rules supra read with Rule 2(b).

E. De-minimus.

5. As regards ascertaining that the imports from the subject countries during the period of investigation (POI) are above de-minimus levels, the Authority has referred to the transaction wise data from the subject countries as made available by DGCIS. After examining the data, The Authority holds that imports from all the subject countries are above de-minimus levels in terms of volume of imports.

F. Dumping.

6. Under Section 9A(1) I of the Customs Tariff Act 1975, Normal value in relation to an article means:

1. The comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or

2. When there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either:-

- a. Comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or
- b. The cost of production of the said article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6)";

Provided that in the case of import of the article from a country other than the country of origin and where the article has been merely transhipped through the country of export or such article is not produced in the country of export or there is no comparable price in the country of export, the normal value shall be determined with reference to its price in the country of origin.

7. The Authority sent questionnaires to all the known exporters for the purpose of determination of normal value in accordance with Section 9A(1)(c). Only one exporter M/s SEPL Singapore have responded to the questionnaire in the form and manner required as per letter to the exporters and exporters questionnaire.

F.1 Singapore

(a) Cooperation

8. M/s. Shell Eastern Petroleum Ltd (SEPL)- M/s SEPL , has responded to the exporters' questionnaire by giving information with regard to various appendices mentioned in the exporters' questionnaire. They also offered verification of the data submitted by them and the Authority has verified the data after onsite inspection at the premises of the producer and the exporter.

(b) Normal Value & Export Price:

9. It has been argued by the domestic industry that both the producer as well as the exporters are separate units and therefore there should be two responses from them. It also has been alleged that there was no authorization from M/s Seraya Chemicals Singapore (PTE) Ltd for authorizing SEPL to undertake obligations on behalf of M/s Seraya. The Authority has verified the information submitted by the interested parties in this regard and has concluded that M/s Seraya Chemicals is a fully integrated cost centre within statutory accounts and as a single tax entity with SEPL within Singapore. The Authority has therefore treated response from the producer and exporter as a collective response from both the companies from Singapore for this subject investigation. With regards to allegation of sourcing their inputs through their related subsidiary or related company or through relationship company, the Authority notes that M/s SEPL sources the input propylene (PP) based on arms length pricing mechanism which includes elements of market related propylene prices through another company which is based on the **** at a reference price which is based on margin sharing between **** and ****. Further, After examining the documents, it is also concluded that these input prices are based on the contract which is further based on parameters **** which is applicable for all the users of that input and hence, there is no relationship pricing involved in the purchase of the inputs for the production of subject goods.

10. The response of the exporter has been examined by the Authority. After examining appendix VIII with regards to the cost of the production and Appendix I with regards to the transaction wise sales information in the domestic sales as per response to the exporters' questionnaire it is determined that domestic sales are under the ordinary course of trade. The Authority has also determined that the domestic sales are in a sufficient quantity for the determination of the Normal value as it comprises more than 5% of the sales of the product under consideration to the importing country. The authority has further verified the data submitted by the exporters by carrying out an on site inspection of the information submitted by the exporters in their submissions before the Authority. The Authority has assessed the normal value for the cooperating exporter after making all the adjustments required to be made at the ex-factory level as claimed by the exporter. Similarly, the authority has assessed ex factory export price of the cooperating exporter after allowing various adjustments as claimed by the exporter while arriving at net export price at the ex factory level.

(c) Comparison

11. For the purpose of a fair comparison between the normal value and export price at an ex factory level, due allowance in the form of adjustments was made for differences that were claimed and demonstrated to affect prices and price comparability. These adjustments were made, wherever appropriate, in respect of transport, insurance, handling, loading, credit costs and others in accordance with para 6 of the annexure I of the anti dumping rules made under the Customs Tariff Act.

(d) Dumping Margin:

12. In accordance with Rule 6(IV) of annexure I to the anti dumping rules, the dumping margin was established on the basis of weighted average normal values with the weighted average export price. The comparison showed the existence of dumping of the subject goods by the exporter during the POI. The weighted average dumping margin, expressed, as a percentage to the export price has been determined and is 7.64%.

F.2 Other exporters from Singapore:

13. No other exporters from Singapore have responded to the Authority's request for information. The claim made by the petitioner with the regard to the determination of normal value and export price has also not been disputed by the other interested party (ies). Thus, the dumping margin in case of Non-co-operative/other exporters of Subject goods from Singapore is assessed by Authority at US\$ ****/MT orof Export price after determining the normal value as US \$****/MT as per the best information available and export price as US\$****/MT taking the weighted average export price from Singapore to India during the POI .

F.3 European Union

(a) Cooperation:

14. The only company from the European Union exporting producer M/s. Repsol YPF submitted only part information and they have not submitted response in the form and manner as prescribed in the exporter's questionnaire. They have not submitted any information with regards to the Appendix 1, which would show transactions wise sales information in the country of origin. They have submitted some information with regards to the exports to subject goods to India during the POI but they have not submitted this information along with the evidences/invoices in the form and manner of the exporter's questionnaire. Further, they have not submitted 2A which shows the sale of the subject goods of the company with separate data for exports to India, domestic market and exports to the other countries. Similarly, Appendix 3 has not been submitted which would provide information about operating statistics of the firm. Though they have submitted some information with regards to the sales price structure for India and the EU, they have not submitted any information evidencing the various adjustments claimed in their sales price structure. Further no information pertaining to the Appendix 4 and Appendix 5 has been submitted which would show installed capacity, production, sales and raw material consumption and reconciliation. Further statement of raw material consumption as required in Appendix 6 and allocation and apportionment of expenditure as required in the Appendix 7 has not been submitted. Additionally, no information with respect of statement of the cost of the production as required in the Appendix 8, Factory cost and profit of exports to India and domestic sales as required in the Appendix 8A and 8B has been provided without which the tests of ordinary course of trade for domestic sales for determination of Normal value is not possible. Further, statement of the allocation of the SGA overheads has not been provided as required in the Appendix 9. In fact the entire submission made by the exporter to the exporters questionnaire is grossly deficient. The authority notes that the company was reminded by the authority to submit the complete response in the form and manner as prescribed in the exporter's questionnaire along with its Non confidential summary and was also reminded of the fact that if the information was not supplied within reasonable time, the Authority would be free to make determinations on the basis of the facts available, including those contained in the application for the initiation of the investigation by the domestic industry. The Authority notes that the firm in their communication dated 25th June 2004 has maintained that it has submitted all the "relevant information to show their position". They have further added that they have received advice from EC DG tradeB.2 and they are working with them in the issue. In view of non submission of response to the exporters questionnaire, the Authority treats the exporters as Non cooperative within the meaning of Agreement of Anti Dumping.

(b) Normal Value and Export Price:

15. The authority notes that the exporter has not submitted information in the form and manner required under the exporter's questionnaire. As no relevant information had been submitted under various appendices (particularly I & VIII), the authority cannot determine whether the domestic sales have been made in the ordinary course of trade. The claim made by the petitioner with regard to determination of normal value has also not been disputed by the exporter or other interested parties. Under the circumstances, normal value under the rules is determined on the basis of facts available as per rule 6(8) of the Anti-dumping Rules. Therefore, the information available on the estimated costs of the production in the country or origin plus selling, administrative and general expenses and a reasonable amount of profit after making reasonable adjustments has been taken as the basis for working out the normal value of the subject goods for the exporter. Export price at ex factory level has been determined with the available data from the DGCIS and with adjustments as per the facts available.

(c) Comparison:

16. For the purpose of a fair comparison between the normal value and export price at an ex factory level, due allowance wherever appropriate, has been allowed in respect of transport, insurance, handling and other costs.

(d) Dumping Margin:

17. In accordance with Rule 6(IV) of annexure I to the anti dumping rules, the dumping margin was established on the basis of constructed normal values with the weighted average export price at an ex factory level. The comparison showed the existence of dumping of the subject goods by the exporter during the POI. The weighted average dumping margin, expressed, as a percentage to the export price has been determined and is 30.15%.

F.4 Other exporters from EU

18. No other exporters from EU have responded to the Authority's request for information. The claim made by the petitioner with the regard to the determination of normal value and export price has also not been disputed by the other interested party (ies). Thus, the dumping margin in case of Non-co-operative/other exporters of Subject goods from EU is assessed by Authority at US\$ ****/MT or 30.15% of

Export price after determining the normal value as US \$****/MT as per the best information available and export price as US\$****/MT taking the weighted average export price from EU to India during the POI.

F.5 USA & Korea RP:

(a) Cooperation:

19. Neither of the two United States exporting-producers submitted response to the exporters' questionnaire. However, M/s Dow Chemical has submitted some arguments with regards to the like article, volume of imports from USA and injury caused to the domestic industry which have been dealt at the appropriate headings. Further, there has been no response to the exporters questionnaire despite reminders to this effect by the Authority. There was no participation either from the only exporting producer from South Korea.

(b) Normal Value and Export Price:

20. The authority notes that the exporter has not submitted any information in the form and manner required under the exporter's questionnaire. As no relevant information had been submitted under various appendices (particularly I & VIII), the authority cannot determine whether the domestic sales have been made in the ordinary course of trade. The claim made by the petitioner with regard to determination of normal value has also not been disputed by the exporter or other interested parties. Under the circumstances, normal value under the rules is determined on the basis of facts available as per rule 6(8) of the Anti-dumping Rules. Therefore, the information available on the estimated costs of the production in the country or origin plus selling, administrative and general expenses and a reasonable amount of profit after making reasonable adjustments has been taken as the basis for working out the normal values of the subject goods for the exporter from United States and Korea RP separately. Export price at ex factory level has been determined taking into account the weighted average export price as reported by the DGCI&S for both the countries separately.

Comparison:

21. For the purpose of a fair comparison between the normal value and export price at an ex factory level, due allowance wherever appropriate, has been allowed in respect of transport, insurance, handling and other costs.

Dumping Margin:

22. In accordance with Rule 6(iv) of annexure I to the anti dumping rules, the dumping margin for exporters of United States and Korea RP were established on the basis of constructed normal values with the weighted average export price at an ex factory level. The comparison showed the existence of dumping of the subject goods by the exporters from United States and Korea RP during the POI. The weighted average dumping margin, expressed, as a percentage to the export price has been determined and is 46.87% for United States and 29.46% for Korea RP. As there was no cooperation from any of the exporters from United States and Korea RP, the dumping margin has been set by the authority for the United States and Korea RP, as a whole.

| Country | Name of the Producer/exporter | Normal value | Export Price | D.M% |
|-----------|-------------------------------|--------------|--------------|-------|
| Singapore | M/s SEPL Corp, | **** | **** | 7.64 |
| | Other Producers/Exporters | **** | **** | 12.32 |
| EU | All Producers/exporters | **** | **** | 30.15 |
| USA | All Producers/Exporters | **** | **** | 46.87 |
| Korea | All Producers/Exporters | **** | **** | 29.46 |

G. Injury

a) Domestic consumption/demand

23. For the calculation of the Domestic consumption/demand of the product under consideration in a domestic market, the authority added the sales volume of the domestic industry to the total imports into the domestic market. On this basis, the domestic demand or consumption of the subject goods in the domestic market increased from 14626 MTs in 2000-01 to 18719 MTs representing an increase of 27.98%.

| Domestic consumption / Demand | | | |
|-------------------------------|----------|----------|----------|
| | 2000-01 | 2001-02 | POI |
| Domestic Demand | 14626.35 | 17551.24 | 18719.06 |
| Index | 100 | 120 | 127.98 |

24. (a) Cumulative Assessment of the effects of imports concerned

- i) The Authority examined whether imports of subject goods originating in USA, EU, Korea and Singapore should be assessed cumulatively as per Article 3.3 of the Agreement on Anti-Dumping and Rule 11 of the Anti Dumping Rules Under the Customs Tariff Act.
- ii) The margin of dumping established in relation to the imports from each of the countries concerned was above the de minimus threshold as defined in Article 5.8 of the Agreement on Anti-Dumping and Rule 14 of the Anti Dumping Rules and Volume of imports from each of these countries was not negligible.

- iii) As regards the conditions of competition, the investigation showed that subject goods imported from various subject countries were used by same users and the imported subject goods were being imported in the similar price band indicating that all their essential physical and technical characteristics are alike. The Authority further notes that subject goods imported from various subject countries and those sold in the domestic market by the domestic industry was interchangeable and was marketed in the domestic market during the period under consideration through comparable sales channels under similar commercial conditions. The authority further notes that none of the interested parties have submitted any arguments with regard to de-cumulation of any country from the subject countries.
- iv) In the light of the above, the authority has considered that the criteria set out in article 3.3 of the Agreement of Anti-Dumping and as per para iii of the Annexure II under Rule 11 were met and that imports from the countries concerned should therefore be examined cumulatively.

b) Imports originating in the subject countries.

Volume

25. The volume of imports of the product under consideration from subject countries into the domestic market increased by 52 % over the period under consideration. Import volumes into India have been shown separately following the submissions of the disclosure by interested parties. The authority further notes that the domestic consumption increased by 28% during the period under consideration.

| Volume of imports of subject goods (subject countries and Non Subject countries) MT | | | |
|---|---------|---------|----------|
| | 2000-01 | 2001-02 | POI |
| EU | 231 | 453 | 334 |
| Korea RP | 382 | 217 | 598 |
| USA | 2111 | 1711 | 2668 |
| Singapore | 1783 | 3181.9 | 3233.7 |
| Subject countries | 4507 | 5562.9 | 6833.088 |
| Non Subject Countries | 113.6 | 210.63 | 80 |
| Total Imports | 4620.6 | 5773.53 | 6913.088 |

(c) Market Share

26. Over the period under consideration, the share of the domestic market held by dumped imports from the subject countries in the total demand increased by 20 percentage points. The market share held by the dumped imports increased from 30.8% in 2000-01 to 31.7% in 2001-02 and to 37.2% during the POI.

| Market Share of imports from subject countries as a proportion to the Domestic production | | | |
|---|---------|---------|-----------|
| | 2000-01 | 2001-02 | 2002-2003 |
| % Domestic Production | 45.04 | 47.23 | 57.88 |

| Market Share of imports from subject countries as a proportion to the Domestic Demand | | | |
|---|---------|---------|-----------|
| | 2000-01 | 2001-02 | 2002-2003 |
| % Domestic Demand | 30.8 | 31.7 | 37.2 |

27. On the basis of above examination, the Authority concludes that there has been a significant rise in the market share of dumped imports of the subject countries as a share of total demand and it has increased significantly

during the POI as compared to previous years while the share of the domestic industry has declined.

(d) Prices

Evolution of Price over the period under consideration

27. Between 2001-02 and the POI, the average CIF prices of the imports originated in subject countries decreased by 6.6 percentage points during the period under consideration. The decrease occurred steadily over the period under consideration.

| Average price of dumped imports CIF | | | |
|-------------------------------------|---------|---------|-----------|
| | 2000-01 | 2001-02 | 2002-2003 |
| Rs/MT | **** | **** | **** |
| Average price of dumped imports | | | |
| | 2000-01 | 2001-02 | 2002-2003 |
| Indexed | 100.0 | 93.2 | 93.4 |

(e) Price Undercutting

29. A comparison for comparable types of the product concerned was made between the exporting producers and the domestic industries average selling price in the domestic market, net of all rebates and taxes to unrelated customers, at the same level of trade. The prices of the domestic industry were determined at the ex factory level. The constructed CIF prices of the subject countries concerned were adjusted for post importation applicable duties covering basic customs duty. This comparison showed that during the period of investigation, the subject goods originating in the subject countries were sold in the domestic market at prices which undercut the domestic industry's prices when expressed as a percentage of the domestic selling prices of the domestic industry.

Price Underselling

30. The Authority has also examined the claim of the petitioner that the domestic industry is suffering on account of the losses from the sale of propylene glycol. The Authority notes that price underselling is an important indicator to make an assessment of the injury. The Authority has worked out the Non-injurious price for the product under consideration and compared the same with the landed value to arrive at the extent of price underselling. The analysis shows a significant level of incidence of price underselling causing injury to the domestic industry. Additionally, the imports were having significant depressing effect on the prices in the domestic market, as the domestic industry prices have shown significant decline in their selling prices during the period of injury examination as a whole. Due to the depressing effect on the prices of the domestic industry, the margin of price undercutting does not appear significant and imports from some of the subject countries show negative price undercutting as well. However the Authority notes that this could be on account of the price depression of the domestic industry. Thus, examination of the available evidence shows that the domestic industry, as a whole, has suffered injury on its sales of subject goods during POI. The authority has determined the extent of price undercutting during the POI and concludes that the domestic industry has suffered price undercutting and significant price underselling during the POI because of import from subject countries. Further, the Authority has calculated the exporter specific price underselling taking into account the individual landed values of all the co-operative exporters. These landed values are based on the actual export prices and, therefore, the issues relating to the higher prices due to better quality are duly taken care of in the price underselling calculations.

| Price Depression/Undercutting/underselling | | | |
|--|---------|---------|-----------|
| | 2000-01 | 2001-02 | 2002-2003 |
| Selling Price Rs/unit | 100 | 91.4 | 89.2 |
| Cost / Unit | 100 | 87.9 | 94.2 |
| Price Undercutting % | 8-15 | 2-6 | 8-15 |
| Price underselling % | | | 15-25 |

Price Depression

31. As noted in the preceding paragraph, selling prices of the domestic industry have declined during the POI as compared to 2000-01. The Authority on the basis of the examination concludes that the domestic industry is facing the price depression on account of the dumped imports from subject countries. The authority also notes that variable costs form an overwhelming part in the total costs of production of the subject goods and during the period under consideration, though the cost of production has declined by 5-8% from 2000-01 to 2002-03 the selling prices have declined by more than 11%. The authority notes that even after increasing sales volume in absolute terms, the domestic industry's selling prices have been depressed and domestic industry is having to sell the subject goods at a price much less than non-injurious price. On the basis of the examination, the authority concludes that the domestic industry has suffered price depression during the period under consideration.

(f) Situation of the Domestic Industry

Preliminary remarks

32. For the examination of the impact of the imports on the domestic industry in India, the Authority considered such indices having a bearing on the state of the industry as production, capacity utilisation, sales quantum, stock, profitability, net sales realisation, the magnitude and margin of dumping, etc. in accordance with Annexure II (iv) of the Rules.

Capacity, Production and Capacity Utilisation

33. The production of the domestic industry increased from 82% to 89% during the period under consideration. As there was no change in the production capacity during the period under consideration, the capacity utilisation improved by 7% during the period under consideration.

| Production capacity and utilisation | | | |
|-------------------------------------|---------|---------|-----------|
| | 2000-01 | 2001-02 | 2002-2003 |
| Capacity | 13250.0 | 13250.0 | 13250.0 |
| Production | 10986.0 | 10429.0 | 11786.0 |
| Capacity Utilisation% | 82.91 | 78.71 | 88.95 |
| Index | 100 | 94.93 | 107.285 |

Inventories

| Actual and Potential Negative Effects on Inventories | | | |
|--|---------|---------|---------|
| | 2000-01 | 2001-02 | 2002-03 |
| Inventories/Stocks | **** | **** | **** |
| Sales Volume MT | **** | **** | **** |
| Invent % to Sales Vo | 18.13 | 3.83 | 2.58 |
| Indexed Stocks | 100.00 | 24.86 | 16.76 |

34. The stocks decreased by 83.24% during the period under consideration. During the 2000-01, they constituted 18.13% of the sales volume whereas in the period of investigation, they accounted for 2.58% of the sales volume.

Cash Flow

35. Being a multi product company, the Authority could not decisively determine the cash flow pertaining to the product under consideration. Thus, based on the evidence made available, the authority could not conclude injury on account of this parameter despite the claims made by the domestic industry that it has incurred negative cash flow during the POI.

Sales Volume and Market Share of the Domestic Industry

36. The sales by the domestic industry in the domestic market increased by 17.83% in terms of volume. However, in terms of value, the per unit realization had a significant decline.

37. The market share held by the domestic industry, however, declined by more than 6% over the period under consideration.

38. The Domestic industry lost the market share steadily during the period under consideration. However the decline in the market share was more marked in the period of investigation as compared to the preceding year.

| Actual and Potential decline in sales | | | |
|---------------------------------------|---------|---------|---------|
| | 2000-01 | 2001-02 | 2002-03 |
| MT | **** | **** | **** |
| Change on prev Yr | | **** | **** |
| % Change | | 17.71 | 0.11 |
| Rs sales | **** | **** | **** |
| Change on prev Yr | | **** | **** |
| % Change | | -8.64 | -2.54 |

| Actual and Potential decline in output | | | |
|--|---------|---------|---------|
| | 2000-01 | 2001-02 | 2002-03 |
| Kg (000) | **** | **** | **** |
| % Change | | 94.93 | 107.28 |

| Market Share of the Domestic Industry Indexed | | | |
|---|---------|---------|-----------|
| | 2000-01 | 2001-02 | 2002-2003 |
| Subject countries | 30.8 | 31.7 | 36.50 |
| Non Subject Countries | 0.8 | 1.2 | 0.43 |
| Total Imports | 31.6 | 32.4 | 36.93 |
| Domestic Industry | 68.4 | 66.0 | 63.07 |

Growth

39. While the domestic demand increased by 28% between 2000-01 and POI, the sales volume of the domestic industry increased only by 17% during the same period. However, their market share in the total demand declined significantly from 68% to 64%. On the other hand, the volume of the imports from the subject countries in the total demand increased by 20% during the same period. The domestic industry, thus, has lost more than 6% in the market share, whereas the imports from the subject countries managed to increase the market share by 52% during the same period. The Authority notes that the domestic industry's presence was steadily reduced in the market while the domestic demand grew up by more than 20% during the period under consideration.

Sales Prices

40. The Domestic producer's average net sales price of the subject goods produced and sold in the domestic market decreased by 11% between 2000-01 and POI.

41. The sales price reduced by 8.64% during the 2000-01 to 2001-02 and by 2.54% from 2001-02 to 2002-03.

42. The evolution of sales price should be seen in comparison with the evolution of unit cost of production. Between 2000-01 and 2001-02, the unit cost of production of the domestic industry decreased by ****%. However, from 2001-02 to 2002-03 increased by ****% mainly because of increase in the cost of the inputs/raw materials. The Authority notes that decline of the sales price of the domestic industry have been more than decline in the unit cost of production. The Authority further notes that the firm has taken concrete steps towards cost reduction by slashing the employment. However, dumped imports exerted a pressure on the domestic industry to bring down the prices even after unit cost of production had gone up on POI.

Employment

43. Between the 2000-01 and POI, the level of employment of the domestic industry declined by 27.1%.

In an effort to increase the productivity in order to reduce unit costs, staff was reduced significantly from 2000-01 onwards.

| Actual and Potential Negative Effects on Employment and Wages | | | |
|---|---------|---------|---------|
| | 2000-01 | 2001-02 | 2002-03 |
| No of Employees | 576 | 469 | 420 |
| % Change | | 81.42 | 89.55 |
| Volume of sales/Emp | **** | **** | **** |
| Index | 100.0 | 144.6 | 161.6 |

| Employment | | | |
|-----------------|-------|-------|-------|
| | POI 2 | POI 1 | POI |
| No of Employees | 576 | 469 | 420 |
| % Change | | 81.42 | 89.55 |
| Index | 100.0 | 81.4 | 72.9 |

| Wages | | | |
|----------------|-------|-------|-------|
| | POI 2 | POI.1 | POI |
| Rs Lacs /Annum | **** | **** | **** |
| % Change | | 92.03 | 88.49 |
| Index | 100.0 | 92.0 | 81.4 |

Productivity

45. Between 2000-01 and POI, productivity measured as output per person employed per year increased by 46.71% during the period under consideration. The increase in the productivity could be seen in the backdrop of decline in the number of employees of the domestic industry.

| Productivity | | | |
|----------------|---------|---------|--------|
| | 2000-01 | 2001-02 | POI |
| Turnover Lakhs | **** | **** | **** |
| Employees | **** | **** | **** |
| Productivity % | **** | **** | **** |
| Index | 100 | 123.09 | 146.71 |

2567 GI/04-8

Wages

46. Between 2000-01 and period of investigation, the average wage per employee decreased by 18.6%. The decline in the wages may be understood in the context of reduction in the number of employees of the domestic industry because of the lay off of staff. It has not been able to grant any increments or promotions during the last few years. All increments other than the statutory bonus have been reduced substantially.

Factors affecting domestic prices

47. The authority notes that the import prices of propylene glycol from the subject countries have declined from Rs.41456 per MT to Rs.38705/MT during the period under consideration i.e. decline of more than 6.5 percentage points. In fact, the prices have declined steeply by 6.6% from 2000-02 to 2001-02 and have steadied between 2001-02 to POI despite the fact that there was a steep increase in the international price of propylene during the period of investigation which was largely necessitated by the spurt in the crude oil prices. It is further noted that the market prices were driven down by the lower prices of the dumped imports along with the higher volumes of the subject goods. Based on this information, the authority concludes that dumped import prices have significantly affected the domestic prices.

Profitability

48. Over the period under consideration, profitability of sales in the domestic market to unrelated customers in terms of profit/loss before tax on net sales declined from -2.5% – 3.5%%. to -8% to -10%. The profitability on the year-to-year basis declined by 9 to 11% in the POI as compared to previous year.

Return on Investment and ability to raise capital

49. The Authority notes that since the company is suffering losses, the return on investment is negative to the extent of 10-13 percentage points during the POI as compared to + 1-2 % in the previous year and -4 to 6 percentage points during the 2000-01. Thus The Authority notes that the Domestic Industry has not been able to earn any returns on its investments.

50. There has been a decline in the capital employed by the domestic industry for the production of propylene glycol.

51. The Authority notes that the company has suffered losses during the period of investigation after some profit in the immediate preceding year. This is despite the fact that the company has made concrete attempts to reduce its cost of production. The company says that they are contemplating to implement a power project which will help to reduce the production cost further. Imposition of Anti Dumping Duty would also enable the company to improve its realizations and the resultant ability to raise capital.

Magnitude of dumping margin

52. The magnitude of dumping margin from each of the subject countries is significant as worked out in earlier paragraphs.

Evidence of Lost Contracts

53. The authority could not find any direct evidence with regard to injury on account of loss of contracts. Hence, the authority could not conclude any findings with regard with injury to the domestic industry on account of this parameter.

Conclusion on Injury

54. From the foregoing, The Authority concludes that Imports of the subject goods from the subject countries into India have increased significantly in absolute terms, also in relation to the total imports of Propylene Glycol in India and also in relation to the demand of Propylene Glycol in India and in relation to domestic production as well. It is also determined that imports from subject countries are undercutting the selling prices of the domestic industry. The petitioner is suffering from price underselling also as landed price of subject goods are below the Non Injurious price or fair selling price of the domestic industry. The petitioner is further suffering from price depression as landed price of the subject goods from subject country have exercised a downward pressure in the domestic selling price of the of the domestic industry. There is a decline in the selling price of domestic industry over period under consideration. The domestic industry has suffered losses on account of sales on subject goods. In fact, they have incurred losses

during the POI. Though the domestic industry has not suffered any decline in the production/capacity utilisation and their inventory sales turnover ratio has also not declined during the period under consideration, the market share of the domestic industry has declined in relation to the total demand and also in relation to the total imports made from the subject countries. Though the sales volume has increased during the period under consideration, their sales prices have declined all along during the period under consideration and the decline in the sales prices has been more than the decline in the costs of the productions of the subject goods. It is also determined that their employment has sharply declined and so have their wages during the period under consideration, however, the firm continues to make losses on account of the sales of the subject goods even after recording the sharp improvements in their productivity due to aforementioned reasons. On the basis of the foregoing, the Authority observes that the domestic industry has suffered volume as well as price effect due to dumped imports from subject countries. On the whole, the domestic industry has suffered material injury on account of dumped imports from subject countries.

H. Causal Link.

(a) Introduction

55. In order to reach its conclusions on the cause of the injury suffered by the domestic industry and in accordance with Article 3.5 of Agreement of Anti Dumping and as per para (v) of Annexure II under Rule 11 under Customs Tariff Act as amended, the Authority examined the impact of all known factors and their consequences on the situation in that industry. Known factors other than the dumped imports, which could at the same time have injured the domestic industry, were also examined to ensure that the possible injury caused by these other factors was not attributed to the dumped imports.

(b) Effect of dumped imports

56. Between 2000-01 and the POI, dumped imports from the subject countries increased significantly in volume by 52% and in market share by 20% (from 30.8% in 2000-01 to 37.2% in the POI). As regards the export prices, they decreased substantially during the whole period under consideration and undercut domestic industry prices during the POI on average by 9.73%. Moreover, undercutting figures did not show the full impact of the dumped imports, since domestic industry prices

were depressed. All this coincided with the deterioration of the situation of the domestic industry in terms of price reductions, reduced market shares as well as deteriorating profitability.

57. Prices of dumped imports were below those of the domestic industry throughout the period under consideration and exerted a pressure on them which forced the domestic industry to decrease prices in spite of increasing costs of production. It is, therefore, considered that the dumped imports caused material injury to the domestic industry.

(c) Effect of Other factors

(a) Performance of Other Domestic producers:

58. There was no other domestic producer of the subject goods during the period under consideration except the petitioner. Therefore, the performance of other domestic producers could not have any bearing on the performance of the domestic industry producing the subject goods.

(b) Self Inflicted Injury, Economies of Scale & Cost Efficiency of SEPL:

59. It has been argued by the exporter that it is the cost structure, purchase policy, contract terms and policy of the petitioner to use its propylene oxide production specifically in its polyol business, therefore, restricting their loading of propylene glycol assets which has primarily led to alleged injury, if any. The Authority has arrived at the cost of production of the subject goods and its Non injurious price by taking into account actual cost of production of subject goods by verifying the domestic industries data without loading any overheads pertaining to the Polyol business. Moreover, the averments of the exporter are not substantiated with any evidence.

60. It has been argued by SEPL that their capacity to produce the raw materials is very high as compared to the Domestic Industry, leading to economies of scale. It has further been argued that the process of manufacture of PO, the major input for the production of Propylene Glycol, adopted by the Domestic Industry and SEPL are quite different. It has been stated that SEPL uses SMPO process which is a proprietary process of Shell. On the other hand, the process adopted by the Domestic Industry is the

Chlorohydrin process. It has been stated that the SMPO process adopted by SEPL has an advantage over the Chlorohydrin process adopted by the petitioner as the former converts the major raw material i.e., propylene into the finished product more efficiently and generates lesser waste product. Further, it has been stated by SEPL that the logistics costs in their case are much lower due to the existence of corridor pipelines and better distribution systems.

61. The Authority notes with regard to the contentions made by SEPL that if there are any economies of scale that may lead to reduction of costs and better efficiencies, the same would be adequately reflected in the cost of production of the concerned exporter. Moreover, the exporter has not substantiated his arguments with any facts or evidence in his support.

62. Further, annexure 1(i) of the Anti Dumping rule states that

"1. The elements of costs referred to in the context of determination of normal value shall normally be determined on the basis of records kept by the exporter or producer under investigation, provided such records are in accordance with the generally accepted accounting principles of the exporting country, and such records reasonably reflect the cost associated with production and sale of the article under consideration."

The above Rule which is in line with the WTO Agreement on Anti-dumping, requires the investigating authorities to determine the normal value normally on the basis of records kept by the exporter or producer under investigation so long as it can be proved that the accounting systems followed by the exporter are as per their GAAP and that they reasonably reflect the cost associated with production and sale of the article under consideration.

63. The Authority, therefore, concludes that the cost and production efficiency of any exporter are duly reflected in their cost of production for the purpose of determination of normal value.

(c) Production & Capacity:

64. As regards the Domestic Industry's inability to fill the gap between the domestic demand and their own production, it may be observed that the imposition of anti-dumping duties does not amount to any kind of restriction on the supplies from other non-dumped sources or even from the subject countries at non-dumped

prices. The Authority, therefore, does not find any merit in the exporters arguments.

(d) Contraction of demand or Changes in the pattern of consumption

65. The Authority notes that there is no contraction in the overall demand during the period under consideration. On the contrary, the overall demand has increased by 28% from 2000-01 to 2002-03. The Authority also, therefore, concludes that there is no apparent change in the pattern of consumption.

(e) Volume and Prices of imports not sold at the dumped prices

66. According to the available information, the total import volume of the product concerned originating in countries other than subject countries decreased by 50% and their market share came down from 0.8% to 0.4%. The Volume of the dumped imports have increased from 30.8% to 37.2% during the period under consideration while the proportion of the Non dumped imports have declined from 0.8% to 0.4% during the same period. It is further noted that imports from non subject countries are very negligible in the absolute terms also therefore, they are considered not to have had any impact on the domestic industry.

(f) Trade Restrictive practices of and competition between foreign and domestic producers

67. The Authority notes that there is a single market for the subject goods where dumped imports from the subject countries compete directly with the subject goods produced by the domestic industry. On the basis of the examination of the transaction wise imports from the subject countries and from the data furnished by the cooperating exporter from Singapore, it appears that the price determines the choice of the supplier as dumped subject goods are like product to the indigenous producer. The authority further notes that the imported product is sold to meet the similar commercial grades and specification as domestically produced subject goods. It is further noted that the imported subject goods and domestically produced goods are like articles and are used for similar applications/end uses.

(g) Developments in Technology, Export performance and productivity of the Domestic Industry

68. The authority notes that Manali Petrochemicals Ltd (MPL) is operating a propylene oxide plant based on chlorohydrine route technology. The petitioner maintains that this is ideally for medium scale plants where both chlorine and propylene are available and are located very close to sea costs to enable the company to pump the large waste water generated by this process. The petitioner maintains that the technology adopted by M/s. MPL for production of propylene glycol is most modern one and is comparable to any of the multinational plants. The authority further notes that the company has been certified to ISO 9001 since 1996 by DNV with the recertification audits successfully complete in 1999 and 2002. It is also noted that the firm has been certified for compliance as per ISO 14000 which primarily deals with commitment to environment, reuse the waste water and limit the use of resources. On the basis of the examination of the records of the petitioner, the authority holds that developments in technology has not been a relevant factor for the injury to the domestic industry.

69. With regard to the export performance of the domestic industry, the authority notes that though there has been an improvement in the exports of the domestic industry during the period under consideration, it still forms a very insignificant part of the domestic sales of the domestic industry. Hence, the authority holds that material injury suffered by the domestic industry may not as a result of the export performance of the domestic industry.

70. As regards improvement in productivity, the authority notes that during the period under consideration, the productivity measures as output per person employed per year increased by 46.7% during the period under consideration. It is further noted that the increase in productivity may be seen in the backdrop of decline in the number of employees of the domestic industry and also in view of the various cost cutting measures implemented by the domestic industry. On the basis of the examination, the authority holds that the firm has taken steps for better productivity and the productivity per se is not the cause for the injury to the domestic industry.

(h) Conclusion on causation

71. Given the above analysis which has properly distinguished and separated the effects of all known factors on the situation of the

domestic industry from the injurious effects of the dumped imports, it is concluded that these other factors as such did not reverse the fact that the material injury found may be attributed to the dumped imports.

72. It is, therefore, concluded that the dumped imports originating in the subject countries have caused material injury to the domestic industry within the meaning of Rule 11 of Anti Dumping rules and article 3.5 of the Agreement of Anti Dumping.

I. Indian Industry interest.

73. The purpose of anti dumping duties in general is to eliminate dumping which is causing injury to the domestic industry and to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market.

74. The Authority recognizes that the imposition of anti dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition on the Indian market will not be reduced by the anti dumping measures. On the contrary, imposition of anti dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of subject goods.

75. The Authority notes that the imposition of anti dumping measures would not restrict imports from subject countries in any way, and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers. The consumers could still maintain two or even more sources of supply.

J. CONCLUSIONS:

76. The Authority has, after considering the foregoing, come to the conclusion that:

- A. The subject goods have been exported to India from the subject countries below its normal value.

- B. The Domestic Industry has suffered material injury;
- C. The injury has been caused cumulatively by the dumped imports from Subject Countries.

77. The Authority considers it necessary to impose an anti dumping duty on all imports of propylene glycol from subject countries in order to remove the injury to the domestic industry. The margin of dumping determined by the Authority is indicated in the paragraphs above. The Authority proposes to recommend the amount of anti dumping duty equal to the margin of dumping or less, which if levied, would remove the injury to the domestic industry. For the purpose of determining injury, the landed value of imports is proposed to be compared with the non-injurious price of the petitioner company determined for the period of investigation.

78. Accordingly, the Authority recommends that the definitive anti dumping duties be imposed from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government on all imports of propylene glycol falling under Custom Heading 29053200 originating in or exported from subject countries. The Anti-Dumping duty shall be the difference between the amount mentioned in column 9 of the following table and the landed value of imports per MT to be imposed from the date of Notification to be issued in this regard by the Central Government on all the imports of subject goods falling under Chapter 29 of the Customs Tariff, originating in or exported from the countries mentioned below: -

| TABLE | | | | | | | | | | |
|-------|-----------------------------|----------------------|-------------------|-------------------|------------------------------|------------------------------|---------------------|---------|-------------|-----------|
| S.No | Sub heading or Tarriff Item | Description of goods | Specification | Country of origin | Country of export | Producer | Exporter | Amount | Unit of Mea | Curren cy |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 |
| 1 | 29053200 | Propylene Glycol | Any Specification | Any | EU, USA, Korea RP | Any | Any | 1221.38 | MT | US Dollar |
| 2 | 29053200 | Propylene Glycol | Any Specification | EU, USA, Korea RP | Any | Any | Any | 1221.38 | MT | US Dollar |
| 3 | 29053200 | Propylene Glycol | Any Specification | Singapore | Singapore | M/s SEPL, Singapore | M/s SEPL, Singapore | 991.32 | MT | US Dollar |
| 4 | 29053200 | Propylene Glycol | Any Specification | Singapore | Singapore | Any producer except M/s SEPL | Any | 1019.13 | MT | US Dollar |
| 5 | 29053200 | Propylene Glycol | Any Specification | Singapore | Any country except Singapore | Any | Any | 1019.13 | MT | US Dollar |

79. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by the Customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties under sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975.32.

80. An appeal against this order shall lie before the Customs Excise and Service Tax Appellate tribunal, in accordance with the Act.

81. The Authority may review the need for continuation, modification or termination of the definitive measures, as

recommended herein, from time to time, as per the relevant provisions of the Act, and public notices issued in this respect from time to time. No request for such a review shall be entertained by the Authority unless the same is filed by an interested party within the time limit stipulated for this purpose.

ABHIJIT SENGUPTA, Designated Authority